

کروں گا کہ وہ آیا جائے وہی کہیں۔
سنہری مہاراج کتنے راز دان سے درخواست
پیش کرتے جاتی کہ خادم اعلیٰ راجہ شہید اعظم
اس کے سے ربا جائزہ میں بیٹھ کر وہی کیشری
ایک ناخوش گوار ذہنیت متھام ہے بہت
ہے جس سے لوگوں عام بول چال میں جنت
وہام کوئی خاص جگہ نہیں یہ ایک ذہنی کمزوری
کو لالہ زار بنایا تھا اس کا جائزہ لینے سرگ
نے سر دھڑکی باندھ لگا کر اپنے خون سے ماتروی
اور جسی آندو لن کو پیر دان چڑھانے کے لے کر
ہیں جاتی یہ صدارت کے جو آندو لن چلا یا تھا
اس بات کے لئے سرگ وہی جسے ہوئے ہیں
آج ہم کیشری پنڈت جاتی کے افغان
سنہری لکے کوں صاحب بادام

مفتی مہاراج گرو گرو انانک

خات صد دام صاحب اور صاحبزاد

میں نے گذشتہ اگست میں جب اپنی
موصوم اور بے بسی بیوی کی ہمدردی
کچھ کا ہے ہو کر اپنے چارہ کی کھالی کھجور ایک
غیر مند فوجوں کی حمایت میں کچھ سے
رہا نہ گیا ہیں نے ایک کھجور کے پھانے والے
نوجوانوں کا ساتھ دیا، اصلی مقصد آندہ وطن
کامیاب تھا کہ سماج کا دھارم اور کر کے وطن
کے ان رضا مینوں کے حمایتی کو جانا جا کر ہیں

۱۸۱۸ سال کے بعد کافی دیر میں

کہ یہ ساری حالتیں میں سرکاری رخصتوں کے لئے ہوتی ہیں۔

الحمد لله الذي هدانا لهذا

در این کتاب

وہاں سے لے کر پورے ملک کے

وہ کہتے ہیں کہ اگرچہ یہ ایک نیا نیا

١٠٠

مناجات ابن عربی علی سالی مرقوم

پہلے سے اس پر غور کیا ہے

در این روز حق تعالی را در میان

اسماء بنتی بخیر و بی ابرو و لولہ و لولہ

حاصل ہیں۔ یہ سب نے اپنے اھوتے ہوئے

اربابوں کو دبا کر جانے کی سہلائی ہے خاطر ایسا

انھنی جوانیاں تیار کر دیں۔

جن جو انوں کو آجے شاہی یا

کے بازار میں بولی یہ چڑھایا جاتا ہے

سے یہ صلیبیوں کے ہمارے دلوں

شماره ۱۰۰۰

پنج روز در هر روز

تذکرہ باغیچہ کی پید کی شکایت

心

مجلد اول

کفر

5
1

五

266 ①

हेअर्जुन जो जो प्राणी ऐश्वर्यवालाहै तथा लक्ष्मीवालाहै तथा बलवालाहै तिस तिस प्राणीकूं हों तूं मैपरमेश्वरके शक्तिकेअंश
करिकैउत्पन्नहुआ जान ॥ ४१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसलोकविषे जोजोप्राणी ऐश्वर्यरूपविभूतिकरिकै युक्तहै ॥ तथा जोजोप्राणी श्रीमत्है ॥ अर्थात् लक्ष्मीकरिकै वासंपदाकरिकै वाशोभाक
रिकै वाकांतिकरिकै युक्तहै ॥ तथा जोजोप्राणी अत्यंतबलादिकोंकरिकैयुक्तहै ॥ तिसतिसप्राणीकूंहीं तूं मैपरमेश्वरकीशक्तिकेअंशकरिकैउत्पन्नहुआ जान
इति ॥ यहभगवान्कावचन पूर्वनहीं कथनकरीहुईविभूतियोंकेभीसंग्रहकरावणेवासतैहै इति ॥ ४१ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार एकदेशरूप अवयवकरिकै विभूतिकूंकथ
नकरिकै अब सकलतारूपकरिकै तिसविभूतिकूं कहैहैं ॥

(मू०श्लो०) अथवाबहुनैतेनकिंज्ञातेनतवार्जुन ॥ विष्टभ्याहमिदंकृत्स्नमेकांशेनस्थितोजगत् ॥ ४२ ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्र
ह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेविभूतियोगोनामदशमोऽध्यायः समाप्तः ॥ १० ॥ अथवा । बहुना । एतेन । किं । ज्ञातेन ।
तव । अर्जुन । विष्टभ्य । अहम् । इदम् । कृत्स्नम् । एकांशेन । स्थितः । जगत् ॥ ४२ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ अथवा हेअर्जुन इस
बहुत ज्ञातकरिकै तुमारा क्याप्रयोजनसिद्धहोवैगा इस सर्व जगत्कूं मैपरमेश्वर एकदेशकरिकै धारणकरिकै स्थितहुआहूं ॥
॥ ४२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ ईहां (अथवा) यहपद पूर्वउक्तविभूतिपक्षतेभिन्नपक्षकावाचकहै ॥ सोपक्षांतर कहैहै ॥ हेअर्जुन (आदित्यानामहंविष्णुः) इत्यादिकवचनोंक
रिकै मंदअधिकारीपुरुषोंकेध्यानवासतै कथनकरीजा हमनै आपणीसावशेष विभूतिहै ॥ इसबहुतप्रकारकीसावशेषविभूतिकेज्ञानकरिकै तैंउत्तमअधिकारीकूं
कौनफलहैं ॥ किंतु कोईभीफल तेरेकूंनहीं ॥ जिसकारणतैं पूर्वउक्तयत्किंचित्विभूतिकेज्ञानहुएभी हमारीसर्वविभूतियोंकाज्ञान होतानहीं ॥ यातैं
तैंउत्तमअधिकारीकूंतों याप्रकारतैं हमाराध्यानक-याचाहीये ॥ हेअर्जुन मैपरमात्मादेव इससर्वजगत्कूं आपणेएकदेशमात्रकरिकै धारणकरिकै अथवा व्याप्त
करिकै स्थितहूं मैपरमात्मादेवतैंभिन्न कोईवस्तुहैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (पादोऽस्यविश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि) ॥ अर्थयह ॥ इसपरमात्मादेवका यहसर्व
विश्व एकपादहै ॥ और तीनपादतों आपणेनिर्गुणस्वयंज्योतिस्वरूपविषेस्थितहैं इति ॥ यातैं हेअर्जुन द्वादशआदित्योंविषे विष्णुनामाआदित्यमैंहूं तथानक्षत्रोंकेम
ध्यविषेचंद्रमामैंहूं इत्यादिकपरिच्छिन्नदृष्टिकापरित्यागकरिकै तूं सर्वजगत्विषे मैपरमात्मादेवकूंव्यापकदेख इति ॥ यद्यपि निरवयवानिराकारपरमा

त्माका अंश तथापाद संभवतानहीं ॥ तथापि जैसे निरवयवआकाशके घटमठादिकउपाधियोंकरिकै घटाकाश मठाकाश मेघाकाश इत्यादिकअंशोंकीकल्प
नाहोवैहैं ॥ तैसे निरवयवनिराकारपरमात्मादेवकेभी अविद्यादिकउपाधियोंकरिकै तेअंश तथापाद कल्पनाकरेजावैहैं ॥ वास्तवतैं तेअंश तथापादहैनहीं इति ॥
४२ ॥ ❀ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्धनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थ
दीपिकाख्यायां दशमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १० ॥

इति दशमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १० ॥



ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्यभ्योनमः ॥ अथ एकादशाध्यायप्रारंभः ॥ तहां पूर्वदशम अध्यायविषे श्रीभगवान्
नानाप्रकारकीविभूतिकंकथनकरिकै ताकेअंतविषे (विष्टभ्याहमिदंकृत्स्नमेकांशेनस्थितोजगत्) इसवचनकरिकै परमेश्वरके सर्वविश्वात्मकस्वरूपकूं कथनक
रताभया ॥ तिसकूंश्रवणकरिकै परमउत्कंठाकूंप्राप्तहुआ सोअर्जुन परमेश्वरके तिस सर्वविश्वात्मकस्वरूपकेसाक्षात्कारकरणेकीइच्छाकरताहुआ तथापूर्वउक्तअर्थ
कीप्रशंसाकरताहुआ याप्रकारकावचन कहताभया ॥

(मू० श्लो०) अर्जुनउवाच ॥ मदनुग्रहायपरमंगुह्यमध्यात्मसंज्ञितम् ॥ यत्त्वयोक्तंवचस्तेनमोहोयंविगतोमम ॥ १ ॥ मदनुग्रहाय ।
परमं । गुह्यम् । अध्यात्मसंज्ञितं । यत् । त्वया । उक्तं । वचः । तेन । मोहः । अयं । विगतः । मम ॥ १ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन्
हमारेअनुग्रहवासतै आपनै जो परमं गुह्य अध्यात्मनामवाला वचनं कथनं कन्याहै तिसवचनकरिकै मैंअर्जुनका यह मोह नष्टहो
ताभयाहै ॥ १ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् यह हमारे भ्रातापुत्रादिकसर्वबांधव मरणकूंप्राप्तहोतेहैं और मैंअर्जुन इनोकाहननकरताहूं इसप्रकारकेशोकमोहरूपसागरविषे डूब्याहुआ
जोमैंअर्जुनहूं ॥ तिसहमारेअनुग्रहवासतै अर्थात् तिसशोकमोहकी निवृत्तिरूपउपकारवासतै परमरूपालुसर्वज्ञआपनै (अशोच्यानन्वशोचस्त्वम्) इसवचनतैंआ
दिलैके षष्ठेअध्यायकीसमाप्तिपर्यंत त्वंपदार्थकानिरूपक जोवाक्य कथनकन्याहै ॥ कैसाहैसोवाक्य परमहै ॥ अर्थात् निरतिशयमोक्षरूपपुरुषार्थविषे परिअवसान
वालाहै ॥ अथवा परम कहिये शीघ्रहीशोकमोहकानिवर्त्तकहोणेतैं उत्कृष्टहै ॥ पुनःकैसाहैसोवचन गुह्यहै ॥ अर्थात् शास्त्रनिषिद्धकर्मविषेप्रवृत्त तथाश्रद्धातैंर
हित तथाविषयोविषेआसक्त ऐसेअनधिकारीपुरुषोंकूं नहींदेणेयोग्यहै ॥ पुनःकैसाहैसोवचन अध्यात्मसंज्ञितहै ॥ अर्थात् आत्माअनात्माकेविवेककूंविषयकरणेहारा
है ॥ तहां आत्माअनात्माकेविवेककरणेवासतैजोशास्त्रहै ताकानाम अध्यात्महै ॥ सोअध्यात्महै संज्ञा क्या नाम जिसका ताकानाम अध्यात्मसंज्ञितहै ॥ ऐसे आपके
वचनकरिकै मैंअर्जुनका यह स्वअनुभवसिद्धमोह नष्टहोताभयाहै ॥ अर्थात् मैंअर्जुन इनभीष्मद्रोणादिकोंकाहननकरताहूं तथामैंअर्जुननैं यहभीष्मद्रोणादिक हनन
करीतेहैं इत्यादिक नानाप्रकारकाविपर्ययरूपमोह हमारा तिसआपकेवचनकरिकैनष्टहोताभयाहै ॥ जिसकारणतैं तिसपूर्वउक्तवचनविषे (नायंहंतिनहन्यते नजाय
तेप्रियतेवाकदाचित् वेदाविनाशिनंनित्यम् अच्छेद्योयमदाह्योयम्) इत्यादिकवचनोकरिकै इसआत्माकूं आपनैं सर्वविकारोतैंरहितकथनकन्याहै तिसकारणतैं सोहमा
रामोह अभी नष्टहोताभयाहै ॥ तहां इसश्लोककेप्रथमपादविषे जोएकअक्षरअधिकहैसोआर्षहै अर्थात् ऋषिप्रणीतहोणेतैं दुष्टनहींहै इति ॥ १ ॥ * ॥ तहां

जैसे त्वंपदार्थकानिर्णयहै प्रधानजिसविषे ऐसा षष्ठेअध्यायपर्यन्त आपकावचन हमनें श्रवणकन्याहै ॥ तैसे तत्पदार्थकानिर्णयहै प्रधानजिसविषे ऐसा सप्तअध्यायतैआदि लैके दशमअध्यायपर्यंत आपकावचनभी हमनें श्रवणकन्याहै इसवार्त्ताकूं अर्जुन कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) भवाप्ययौहिभूतानां श्रुतौ विस्तरशोमया ॥ त्वत्तः कमलपत्राक्षमाहात्म्यमपि चाव्ययम् ॥ २ ॥ भवाप्ययौ । हिं । भूतानां । श्रुतौ । विस्तरशः । मया । त्वत्तः । कमलपत्राक्ष । माहात्म्यम् । अपि । चं । अव्ययम् ॥ २ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हे कमल पत्राक्ष इनभूतोंके उत्पत्तिप्रलय दोनोंतै भगवान्तै ही हमनें विस्तारतै श्रवणकन्याहै तथा आपकासोपाधिक माहात्म्य तथा निरुपाधिक अव्ययरूपमाहात्म्य भी हमनें श्रवणकन्याहै ॥ २ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे कमलपत्राक्ष श्रीभगवान् ॥ इहां कमलकेपत्रकीन्याई दीर्घ तथाविशाल तथाकिंचित्तरक्ततायुक्त तथा अत्यंतमनोरमहैं अक्षि क्या नेत्र जिसके ताकानाम कमलपत्राक्षहै ॥ इससंबोधनकरिकै अर्जुननें भगवान्की जो अत्यंतसौंदर्यता कथनकरीहै ॥ सो परमेश्वरविषयकप्रेमकीअतिशयतातै कथनकरीहै ॥ अथवा (हे कमलपत्राक्ष) इससंबोधनका यहअर्थकरणा ॥ (कमलतिप्रकाशयतिइतिकमलमात्मज्ञानम् ॥) अर्थयह ॥ स्वस्वरूपानंदरूपजोब्रह्मसुखहै ताकानाम कहै ॥ तिसब्रह्मसुखकूं जोप्रकाशकरेहै ताकानाम कमलहै ॥ ऐसा महावाक्यजन्य आत्मज्ञानहै ॥ आत्मज्ञानकरिकैहीं ताब्रह्मसुखका प्रकाशहोवेहै ॥ तथा (पतनात्त्रायतेइतिपत्रम् ॥) अर्थयह ॥ इनअधिकारीपुरुषोंकूं इसजन्ममरणकेप्रवाहरूपसंसारसमुद्रविषेपतनतै जोरक्षणकरेहै ताकानाम पत्रहै ॥ ऐसापत्ररूपभी सो आत्मज्ञानहीहै ॥ अर्थात् कमलरूपहोवै तथासोईहीपत्ररूपहोवै ताकानाम कमलपत्रहै ॥ (कमलपत्रेणअक्षयतेप्राप्यतेइतिकमलपत्राक्षः) ॥ अर्थयह ॥ तिस कमलपत्रनामा आत्मज्ञानकरिकै जोप्राप्तहोवै ताकानाम कमलपत्राक्षहै ॥ अर्थात् हेआत्मज्ञानकरिकैप्राप्तहोणेयोग्य शुद्धपरब्रह्म ॥ तैपरमेश्वरतैहीं इनसर्वभूतोंके उत्पत्तिप्रलय हमनें (अहंकृत्स्नस्यजगतःप्रभवःप्रलयस्तथा ॥ प्रकृतिस्वामवष्टभ्य अहंसर्वस्यप्रभवः) इत्यादिकवचनोंकरिकै विस्तारतै श्रवणकन्याहैं ॥ कोईसंक्षेपतैएकहीबार श्रवणनहींकन्ये ॥ हेभगवन् आपपरमेश्वरतै इनसर्वभूतोंकेउत्पत्तिप्रलयकूंहीं केवल हमनें नहींश्रवणकन्या ॥ किंतु तुमारा माहात्म्यभी हमनें बहुतवार श्रवणकन्या है ॥ तहां महात्मारूपपरमेश्वरका जोनिरतिशयऐश्वर्यरूपभावहै ताकानाम माहात्म्यहै ॥ सोमाहात्म्य यहहै ॥ इसलोकविषे जोकर्त्ताहोवैहै सोविकारीहीं होवैहै ॥ और यहपरमेश्वरतौ इसजगत्केउत्पत्तिआदिकोंकाकरताहुआभी अविकारिरूपहीहै ॥ और इसलोकविषे जोपुरुष दूसन्योंकूंप्रेरणाकरिकै शुभअशुभकर्मकरावैहै ॥ सोपुरुष विषमतादोषवालाहीं होवैहै ॥ और यहपरमेश्वर तौ जीवोंकूंप्रेरणाकरिकै शुभअशुभकर्मकरावताहुआभी विषमतादोषतैरहितहै ॥ और इसलोक

विषे जोपुरुष विचित्रफलकाप्रदाताहोवैहैं ॥ सोपुरुष असंगउदासीनहोवैनहीं ॥ और यहपरमेश्वरतौ बंधमोक्षादिकविचित्रफलका प्रदाताहुआभी असंग उदासीनहीं है ॥ इसतै आदिलैकेंदूसराभी सर्वात्मत्व आदिक सोपाधिकमाहात्म्य हमनैं बहुतवार श्रवणकन्याहै ॥ हेभगवन् आपपरमेश्वरका केवल यहसोपाधिकमाहात्म्यहीं हमनैं श्रवणनहींकन्या ॥ किंतुआपपरमेश्वरका निरुपाधिक अव्यय रूपमाहात्म्यभी हमनैं श्रवणकन्याहै ईहां व्ययनाम नाशकाहै तानाशतैंजोरहितहोवै ताका नाम अव्ययहै इति ॥ २ ॥ ॥

(मू० श्लो०) एवमेतद्यथात्थत्वमात्मानं परमेश्वर ॥ द्रष्टुमिच्छामितेरूपमैश्वरं पुरुषोत्तम ॥ ३ ॥ एवम् । एतत् । यथा । आत्थ । त्वम् । आत्मानं । परमेश्वर । द्रष्टुम् । इच्छामि । ते । रूपम् । ऐश्वरं । पुरुषोत्तम ॥ ३ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हेपरमेश्वर जिसप्रकारतैं आपणैआत्माकूं तूंकथनकरताहैं सोआपकाकहणा यथार्थहींहै तथापि हेपुरुषोत्तम तुमारां ऐश्वर रूप देखेनेकूं में इच्छाकरता हूं ॥ ३ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेपरमेश्वर जिस सोपाधिक निरतिशय ऐश्वर्यरूपकरिकै तथा जिस निरुपाधिक निरतिशयऐश्वर्यरूपकरिकै आप आपणैस्वरूपकूं कथनकरतेभयेहो ॥ सोआपकाकहणा यथार्थहींहै ॥ किसीकालविषेभी आपकाकहणा अयथार्थनहींहै ॥ अर्थात् तुमारेवचनविषेकहांभी हमारेकूं अविश्वासकीशंकानहींहै ॥ हेपुरुषोत्तम यद्यपि हमारा आपकेवचनोंविषे दृढविश्वासहै ॥ तथापि कृतार्थहोनेकीइच्छाकरिकै मेंअर्जुन तुमारे ऐश्वररूपकेदेखनेकीइच्छाकरताहूं ॥ अर्थात् ज्ञान ऐश्वर्य शक्ति बल वीर्य तेज इत्यादिगुणोंकरिकैसंपन्न जोआपईश्वरका अद्भुतस्वरूपहै ताकानाम ऐश्वररूपहै तारूपकेदेखनेकीमेंइच्छाकरताहूं ॥ तहां सर्व पुरुषोंतै सर्व ज्ञतादिकगुणोंकरिकै जो उत्तमहोवै ताकानाम पुरुषोत्तमहै ॥ इसपुरुषोत्तमसंबोधनकरिकै अर्जुननैं श्रीभगवान्के प्रति यहअर्थसूचनकन्या ॥ हेभगवन् तुमारेवचन विषे हमारेकूं अविश्वासनहींहै ॥ तथा आपके तिसऐश्वररूपकेदेखनेकीइच्छाभी हमारेकूबहुतहै ॥ इसहमारेहृदयकेवृत्तांतकूं आप सर्वज्ञहोनेतैं तथाअंतर्यामीहोने तैं जानतेहीहो इति ॥ ३ ॥ * ॥ शंका ॥ हेअर्जुन तुमारेकरिकै देखनेकूंअशक्य जोहमारास्वरूपहै ॥ तिसस्वरूपकेदेखनेकीइच्छा तूंकिसवासतैकरता हें ॥ जोवस्तुदेखनेकूंशक्यहोवैहै ॥ तिसवस्तुकेहीं देखनेकीइच्छाकरणी उचितहोवैहै ॥ ऐसी श्रीभगवान्कीशंकाकेहुए अर्जुन कहेहै ॥

(मू० श्लो०) मन्यसेयदितच्छक्यंमयाद्रष्टुमिति प्रभो ॥ योगेश्वरततोमेत्वं दर्शयात्मानमव्ययम् ॥ ४ ॥ मन्यसे । यदि । तत् । शक्यं । मया । द्रष्टुम् । इति । प्रभो । योगेश्वर । ततः । मे । त्वं । दर्शय । आत्मानम् । अव्ययम् ॥ ४ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हेप्रभो

सोतुमारां ऐश्वररूप में अर्जुन न देखने कं शक्य है इस प्रकार जबी आप मानते होवौ तबी हे योगियों के ईश्वर हमारे तांई आप नाशतै रहित तिस ऐश्वररूप विशिष्ट आत्मा कं दिखावौ ॥ ४ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तहां सृष्टि स्थिति संहार प्रवेश प्रशासन इन पांचों के करणे विषे जो समर्थ होवै ताका नाम प्रभु है ॥ हे प्रभो अर्थात् हे सर्व के स्वामिन् ॥ सो आपका ऐश्वररूप में अर्जुन न देखने कं शक्य है ॥ ऐसे जबी आप मानते होवौ ॥ अर्थात् ऐसे जबी आप जानते होवौ ॥ अथवा यह अर्जुन इस हमारे रूप देखै ऐसी जबी आप इच्छा करते होवौ ॥ तब ही हे सर्व योगियों के ईश्वर तिस आपकी इच्छा के वशतैं मैं अत्यंत जिज्ञासु अर्जुन के तांई परम कारुणिक आप तिस ऐश्वररूप विशिष्ट तथानाशतैं रहित आत्मा कं दिखावौ ॥ अर्थात् तिस आपके स्वरूप कं हमारे चक्षुषों का विषय करौ ॥ इहां जे पुरुष अणिमादिक अष्ट सिद्धियों के रिकै युक्त हैं तिनों का नाम योगी है ॥ तिन सर्व योगियों का जो ईश्वर होवै ताका नाम योगेश्वर है ॥ इस योगेश्वर संबोधन करिकै अर्जुन न यह अर्थ भगवान् के प्रति सूचन कन्या ॥ अणिमादिक सिद्धियों के रिकै युक्त जे योगी पुरुष हैं ॥ ते योगी पुरुष भी आपनी इच्छा के वशतैं अशक्य कार्य कूं भी सिद्ध करि सके है ॥ और आप तौ तिन योगियों के भी ईश्वर हो ॥ अर्थात् आप परमेश्वर के ध्यान करिकै ही तिन योगी पुरुषों कूं ऐसा सामर्थ्य प्राप्त भया है ॥ यातैं आप जो कदाचित् तिस स्वरूप के दिखावणे की इच्छा करोगे ॥ तौ मैं अर्जुन तिस आपके स्वरूप कं अवश्य करिकै देखूंगा इति ॥ अथवा (हे योगेश्वर) इस संबोधन का यह दूसरा अर्थ करणा ॥ मैं ब्रह्म रूप हूं या प्रकाश का जो जीव ब्रह्म के एकत्व का दर्शन रूप ज्ञान योग है ताका नाम योग है ॥ ता योग का जो ईश्वर होवै ॥ अर्थात् अधिकारी जन के प्रति ता ज्ञान योग की प्राप्ति करणे विषे जो समर्थ होवै ताका नाम योगेश्वर है इति ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इस प्रकार अत्यंत भक्त अर्जुन करिकै प्रार्थना कन्या हुआ श्री भगवान् ता अर्जुन के प्रति तिस स्वरूप के दिखावणे की इच्छा करता हुआ कहे है ॥

(मू० श्लो०) श्री भगवानुवाच ॥ पश्य मे पार्थ रूपाणि शतशोऽथ सहस्रशः ॥ नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च ॥ ५ ॥ पश्य । मे । पार्थ । रूपाणि । शतशः । अथ । सहस्रशः । नानाविधानि । दिव्यानि । नानावर्णाकृतीनि च ॥ ५ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हे पार्थ नाना प्रकार के वर्ण तथा आकृति हैं जिन के ऐसे नाना प्रकार के अद्भुत अनेक शत तथा अनेक सहस्र मैं परमेश्वर के रूपों कूं तूं देख ॥ ५ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ इहां इस श्लोक तैं आदिलै के अगले चारि श्लोकों विषे क्रमतैं (पश्य) इस शब्द की आवृत्ति करिकै श्री भगवान् ते आपने दिव्य रूप मैं तुमारे कूं दिखा

वताहूं तूं सावधानहोउ इसप्रकार ताअर्जुनकूं अभिमुखकरताभयाहै ॥ और (शतशःअथसहस्रशः) इनसंख्यावाचक दोनोंपदोंकरिकै श्रीभगवान् नैं तिनरूपोंविषे अपरिमितरूपता कथनकरीहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ हेअर्जुन विलक्षणाविलक्षण नीलपीतादिकवर्ण हैं जिनोंके तथाविलक्षणाविलक्षण अवयवोंकीरचनाविशेषरूपआकृतिहैजिनोंकी ऐसेजे अनेकप्रकारके तथाअत्यंतअद्भुत तथाअपरिमितसंख्यावाले मैपरमेश्वरकेरूपहैं तिनरूपोंकूं तूंदेख ॥ अर्थात् तिनरूपोंकेदेखणेकूं तूं योग्यहोउ इति ॥ ५ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे श्रीभगवान् नैं अर्जुनकेप्रति आपणे दिव्यरूपोंकेदिखावणेकीप्रतिज्ञा करी ॥ अब तिसप्रतिज्ञाकेपूर्ण करनेवासतै श्रीभगवान् तिसअर्जुनकेप्रति दोश्लोकोंकरिकै यत्किंचित्मात्र तेआपणेरूप कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) पश्यादित्यान्वसूनुरुद्रानश्विनौमरुतस्तथा ॥ बहून्यदृष्टपूर्वाणिपश्याश्चर्याणिभारत ॥ ६ ॥ पश्य । आदित्यान् ।
वसून् । रुद्रान् । अश्विनौ । मरुतः । तथा । बहूनि । अदृष्टपूर्वाणि । पश्य । आश्चर्याणि । भारत ॥ ६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥
हेअर्जुन तूं आदित्योंकूं तथावसुओंकूं तथारुद्रोंकूं तथा अश्विनीकुमारोंकूं तथामरुतोंकूं देख तंथा पूर्वनहींदेखेहुए बहुत अद्भुत
रूपोंकूं देख ॥ ६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तूं द्वादशआदित्योंकूंदेख ॥ तथा अष्टवसुओंकूंदेख ॥ तथा एकादशरुद्रोंकूंदेख तथा दोनोंअश्विनीकुमारोंकूंदेख ॥ तथा ओगणपंचास मरुतोंकूंदेख ॥ तथा इनोंतैंअन्य दूसरेभीदेवताओंकूं तूं देख ॥ हेअर्जुन जेरूपतैंअर्जुननै तथा किसीअन्यप्राणीनैं इसमनुष्यलोकविषे कबीभी देखेनहींहैं ॥ ऐसेबहुत अद्भुतरूपोंकूं अभीतूंदेख इति ॥ तहां (बहूनि) यहवचन (शतशोअथसहस्रशः) इसपूर्वउक्तवचनका व्याख्यानरूपहै ॥ और (आदित्यान्वसून् रुद्रानश्विनौमरुतस्तथा) ॥ यहवचन (नानाविधानि) इसपूर्वउक्तवचनका व्याख्यानरूपहै ॥ और (अदृष्टपूर्वाणि) यहवचन (दिव्यानि) इसपूर्वउक्त वचनका व्याख्यानरूपहै ॥ और (आश्चर्याणि) यहवचन (नानावर्णाकृतीनिच) इसपूर्वउक्तवचनका व्याख्यानरूपहै इति ॥ ६ ॥ ❀ ॥ हेअर्जुन केवल इतनैमात्ररूपोंकूंहीं तूं देखणेयोग्यनहींहैं ॥ किंतु यहस्थावरजंगमरूपसर्वजगत्हीं हमारेदेहविषेस्थितहुआतूंदेख ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) इहैकस्थंजगत्कृत्स्नंपश्याद्यसचराचरम् ॥ ममदेहेगुडाकेशयच्चान्यद्रष्टुमिच्छसि ॥ ७ ॥ इह । एकस्थम् । जगत् ।
कृत्स्नम् । पश्य । अद्य । सचराचरम् । मम । देहे । गुडाकेश । यत् । च । अन्यत् । द्रष्टुम् । इच्छसि ॥ ७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥
हेअर्जुन हमारे इस देहविषे एकअवयवविषेस्थित जंगमस्थावरसहित समस्त जगत्कूं तूं आज देख तंथा जो कोई अन्यभीजय पराजयादिक देखणेकूं इच्छाकरताहैं सोभीदेख ॥ ७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेगुडाकेश अर्थात् हेनिद्राकूजयकरणेहारा अर्जुन ॥ इसहमारेदेहविषे किसीएक नखकेअग्रमात्ररूपअवयवविषेस्थित इसस्थावरजंगमसहित समग्र जगत्कूं तूं अबी देख ॥ जोसर्वजगत् तिसतिसस्थानविषेभ्रमणकरिकै शतकोटीवर्षपर्यंतभी देखणेकूंअशक्यहै ॥ तिससर्वजगत्कूं तूं अबी एकत्रस्थितहुआहीं देख ॥ हेअर्जुन जोकोई अन्यभी जयपराजयादिकोंकेदेखणेकीइच्छाकरताहोवै ॥ तिनजयपराजयादिकोंकूंभी तूं आपणेसंशयकीनिवृत्तिकरणेवासतै इसहमारे देहविषेदेख इति ॥ ८ ॥ * ॥ तहां (मन्यसेयदितच्छक्यंमयाद्रष्टुमितिप्रभो) ॥ अर्थयह ॥ सोआपकाऐश्वररूप मेंअर्जुननै देखणेकूंशक्यहै इसप्रकार जो आप मानतेहोवै तौं सोरूप हमारेकूंदिखावो ॥ यहजोवचन पूर्व अर्जुननै श्रीभगवान्केप्रति कथनकन्याथा ॥ तिसरूपकेदेखणेविषे श्रीभगवान् अब किंचित् विशेषता कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) नतुमांशक्यसेद्रष्टुमनेनैवस्वचक्षुषा ॥ दिव्यंददामितेचक्षुःपश्यमेयोगमैश्वरम् ॥ ८ ॥ न । तु । मां । शक्यसे । द्रष्टुम् । अनेन । एव । स्वचक्षुषा । दिव्यं । ददामि । ते । चक्षुः । पश्य । मे । योगम् । ऐश्वरम् ॥ ८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तूं पुनः इस आपणीचक्षुकरिकै दिव्यरूपमेंपरमेश्वरकूं कदाचित्भी देखणेकूं नहीं समर्थहैं इसकारणतैं मेंपरमेश्वर तुमारेताई दिव्य चक्षु देताहूं तिसदिव्यचक्षुकरिकै मेंपरमेश्वरके ऐश्वर्यरूप योगकूं तूंदेख ॥ ८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहस्वभावतैंसिद्ध जोतुमाराप्राकृतचक्षुहै ॥ इसप्राकृतचक्षुकरिकै दिव्यरूपवालेमेंपरमेश्वरके देखणेकूं तूं कदाचित्भी समर्थनहींहै ॥ शंका ॥ हेभगवान् तबी मेंअर्जुन तिसतुमारेस्वरूपकूं कैसेदेखसकउगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (दिव्यमिति) हेअर्जुन मेंपरमेश्वरके तिसदिव्यरूपकेदेखणेविषेसमर्थ ऐसी दिव्य कहिये अप्राकृतचक्षुकूं मेंपरमेश्वर तुमारेताई देताहूं ॥ तिसदिव्यचक्षुकरिकै तूं अर्जुन मेंपरमेश्वरकेयोगकूं अर्थात् नवनतेहुएअर्थ केवनावनेकीसामर्थ्यतारूपयोगकूं देख ॥ कैसाहैसोयोग ऐश्वरहै ॥ अर्थात् मेंईश्वरकाहीं असाधारणधर्महै ॥ अन्यकिसीविषे सोयोग रहतानहीं ॥ ईहां किसी पुस्तकविषे (नतुमांशक्यसे) इसप्रकारकाभी पाठहोवैहै ॥ तापाठका यहअर्थकरणा ॥ तूं अर्जुन इसचक्षुकरिकै दिव्यरूपवालेमेंपरमेश्वरकेदेखणेकूं समर्थ नहींहोवैगा इति ॥ ८ ॥ * ॥ तहां श्रीभगवान् अर्जुनकेताई सोआपणादिव्यरूप दिखावताभया ॥ तिसरूपकूंदेखिकै अत्यंतविस्मयकूंप्राप्तहुआ सोअर्जुन श्रीभगवान्के प्रति सोदेख्याहुआदिव्यरूप कथनकरताभयाइसवृत्तांतकूं (एवमुक्त्वा) इत्यादिकषट्श्लोकोंकरिकै धृतराष्ट्रकेप्रति संजयकहेहै ॥

(मू० श्लो०) संजयउवाच ॥ एवमुक्त्वाततोराजन्महायोगेश्वरोहरिः ॥ दर्शयामासपार्थायपरमंरूपमैश्वरम् ॥ ९ ॥ एवम् । उक्त्वा ।

तैतः । राजन् । महायोगेश्वरः । हरिः । दर्शयामास । पार्थाय । परमं । रूपम् । ऐश्वरम् ॥ ९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेधृतराष्ट्र सोम
हानयोगेश्वर कृष्णभगवान् इसप्रकारकावचन कहिकै तिसतैअनंतर अर्जुनकेताई आपणे दिव्य ऐश्वर रूपकूं दिखावताभया ॥
॥ ९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेधृतराष्ट्र सोमहायोगेश्वरहरि अर्थात् सर्वतै उत्कृष्ट तथासर्वयोगिजनोंकाईश्वर तथाआपणे भक्तजनोंकेसर्वक्लेशोंकूंहरणकरणेहारा कृष्णभगवान् ॥
इसप्राकृत चक्षुकरिकै तूं अर्जुन दिव्यरूपमैपरमेश्वरकूं नहींदेखसकैगा यातै में तुमारेकूं दिव्यचक्षु देताहूं याप्रकारकावचन तिसअर्जुनकेप्रति कहिकै ॥ तिस
दिव्यचक्षुकेदेणेतैअनंतर तिसअनन्यभक्तअर्जुनकेताई देखणेविषेअशक्यभीआपणेदिव्यऐश्वररूपकूं दिखावताभया इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥ अब तिसदिव्यरूपकूं
अनेकविशेषणोकरिकैयुक्त कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम् ॥ अनेकदिव्याभरणदिव्यानेकोद्यतायुधम् ॥ १० ॥ अनेकवक्त्रनयनम् । अनेका
द्भुतदर्शनम् । अनेकदिव्याभरणं । दिव्यानेकोद्यतायुधम् ॥ १० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेराजन् अनेकहैंमुखतथानेत्रजिसविषे तथा
अनेकअद्भुतवस्तुवोंकाहै दर्शनजिसविषे तथा अनेक भूषणहैं जिसविषे तथा दिव्यअनेक उठाएहुएहैंआयुधजिसविषे ऐसरूपकूं
सोभगवान् दिखावताभया ॥ १० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेराजन् अनेकहैंमुख तथानेत्र जिसरूपविषे ॥ तथा विस्मयकीप्राप्तिकरणेहारे अनेकवस्तुवोंकाहैदर्शन जिसरूपविषे ॥ तथा अनेकदि
व्यभूषणहैं जिसरूपविषे ॥ तथा उठाएहुएहैंचक्रगदाआदिकदिव्यआयुधजिसस्वरूपविषे ॥ ऐसेस्वरूपकूं सोकृष्णभगवान् तिसअर्जुनकेताई दिखावताभया
इति ॥ १० ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) दिव्यमाल्यांबरधरंदिव्यगंधानुलेपनम् ॥ सर्वाश्चर्यमयंदेवमनंतंविश्वतोमुखम् ॥ ११ ॥ दिव्यमाल्यांबरधरं । दिव्यगं
धानुलेपनं । सर्वाश्चर्यमयं । देवम् । अनंतं । विश्वतोमुखम् ॥ ११ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेराजन् दिव्यमालातथावस्त्रधारणकरेहैं
जिसनै तथा दिव्यगंधवालेवस्तुवोंकाहैलेपनजिसविषे तथासर्वआश्चर्यमय तथाप्रकाशरूप तथाअपरिच्छिन्न तथा सर्वओरतैहैंमुख
जिसविषे ऐसरूपकूं दिखावताभया ॥ ११ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेराजन् पुष्पमय तथारत्नमय ऐसीजेदिव्यमालाहैं ॥ तिनदिव्यमालावोंकूं धारणकन्याहैंजिसनैं ॥ तथा पीतांबरादिकदिव्यवस्त्रोंकूं धारणकन्याहैं जिसनैं ॥ तथा दिव्यगंधवालेकर्पूरचंदनादिकोंकाहैलेपन जिसविषे ॥ तथा सर्वाश्चर्यमयहै ॥ अर्थात् तेजबल वीर्यशक्ति रूप गुण अवयव अवस्थान इत्यादिक सर्वाविशेषोंकरिकै अनेकअद्भुत रूपोंवालाहैं ॥ पुनःकैसाहैसौरूप देवहैं ॥ अर्थात् प्रकाशस्वरूपहै ॥ पुनःकैसाहैसौरूप अनंतहै ॥ अर्थात् देशकालवस्तुपरिच्छेद तैरहितहै ॥ पुनः कैसाहैसौरूप विश्वतोमुखहै अर्थात् सर्वओरतैहैंमुखजिसविषे ॥ ऐसेआपणेस्वरूपकूं श्रीभगवान् ताअर्जुनकेप्रति दिखावताभया ॥ इसप्रकारतैं पूर्वअष्टमेश्लोकविषेस्थित (दर्शयामास) इसपदकेसाथि इनदोनोंश्लोकोंका अन्वयकरणा ॥ अथवा अर्जुनोददर्श इसपदकाअध्याहारकरिकै इनदोनोंश्लोकोंका अन्वयकरणा ॥ अर्थात् ऐसेस्वरूपकूं सोअर्जुन देखताभया इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे तिसविश्वरूपका (देव) यहविशेषण कथनकन्या था ॥ अब तिसिविशेषणका इसश्लोकविषे विस्तारतैंवर्णनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) दिविसूर्यसहस्रस्यभवेद्युगपदुत्थिता ॥ यदिभाःसदृशीसास्याद्भासस्तस्यमहात्मनः ॥ १२ ॥ दिवि । सूर्यसहस्रस्य । भवेत् । युगपत् । उत्थिता । यदि । भाः । सदृशी । सा । स्यात् । भासः । तस्य । महात्मनः ॥ १२ ॥ (इतिप०) ॥ हेराजन् आकाशविषे एकहीकालमें जैवी सहस्रसूर्यकी प्रभा उत्थितहुई होवै तबी साप्रभा तिस विंश्वरूपकी प्रभाके तुल्य होवै^{१३} ॥ १२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेराजन् आकाशविषे सहस्रसूर्यकी अर्थात् एकहीकालविषेउदयहुए अपरिमितसूर्योंकेसमूहकी एकहीकालविषे जोकदाचित् प्रभा उत्थित हुईहोवै है तौ साप्रभा तिसविश्वरूपकीप्रभाकेतुल्यहोवै ॥ अथवानहींभीतुल्यहोवै ॥ और मैंतौ यहमानताहूं ॥ तिनसूर्योंकीप्रभातैभी ताविश्वरूपकीप्रभा अत्यंतउत्कृष्टहै ॥ इसतैंपरेदूसरीकोईउपमाहैनहीं ॥ तहां एकहीकालविषे अपरिमितसूर्योंका उदयहोणाहीं संभवतानहीं ॥ यातैं यहउपमा अभूतउपमाहैं ॥ ताअभूतउपमाकरिकै यहअर्थ सूचनाकन्या ॥ सर्वप्रकारतैं ता विश्वरूपके प्रभाकीउपमासंभवतीनहीं इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व (इहैकस्थंजगत्कृत्स्नंपश्याद्यसचराचरम्) इसवचनकरिकै श्रीभगवान् नैं अर्जुनकेप्रति आपणे देहकेकिसीअवयवविषे सर्वजगत्केदेखणेकीआज्ञाकरीथी ॥ सोअर्जुन तिसअर्थकूंभी अनुभवकरताभया ॥ यहवार्ताभी संजय धृतराष्ट्रकेप्रति कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) तत्रैकस्थंजगत्कृत्स्नंप्रविभक्तमनेकधा ॥ अपश्यदेवदेवस्यशरीरेपांडवस्तदा ॥ १३ ॥ तत्र । एकस्थं । जंगत् ।

कृत्स्नं । प्रविभक्तम् । अनेकधा । अपश्यत् । देवदेवस्य । शरीरे । पांडवः । तदा ॥१३॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेराजन् तिसकाल
विषे सोअर्जुन देवतावोंकरिकै पूज्यभगवान्के तिस विश्वरूपशरीरविषे किसीएकदेशविषेस्थित अनेकप्रकारकरिकै भिन्नभिन्न सर्व
जंगत्कूं देखताभया ॥ १३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेराजन् जिसकालविषे श्रीभगवान्ने अर्जुनकेप्रति आश्चर्यमय विश्वरूप दिखाया ॥ तिसकालविषे सोअर्जुन इंद्रादिकसर्वदेवतावोंकरिकै पूज्यभगवा
नके तिसविश्वरूपशरीरविषे किसीएकअवयवविषे सर्वजंगत्कूं देखताभया ॥ कैसाहैसोजगत् ॥ देव पितर मनुष्य इत्यादिकअनेकप्रकारोंकरिकै भिन्नभिन्नहै इति
॥ १३ ॥ * ॥ हेधृतराष्ट्र इसप्रकार अद्भुतविश्वरूपकेदर्शनहुएभी सोअर्जुन भयकूनहींप्राप्तहोताभया ॥ तथा तिसरूपकूंदेखिकै सोअर्जुन आपणेनेत्रोंकूंभी नहीं
मूढ़ताभया ॥ तथा संभ्रमकेवशतैं सोअर्जुन तिसकालविषे अवश्यकर्त्तव्यअर्थकूं विस्मरणभीनहींकरताभया ॥ तथा भयभीतहोइकै सोअर्जुन तिसदेशतैं
भागताभीनहींभया ॥ किंतु महान्चित्तशोभकेप्राप्तहुएभी अत्यंतधैर्यवालाहोणेतैं सो अर्जुन तिसकालविषे उचितव्यवहारकूंहीं करताभया ॥ यहसर्वअर्थ संजय
धृतराष्ट्रकेप्रति कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) ततःसविस्मयाविष्टोहृष्टरोमाधनंजयः ॥ प्रणम्यशिरसादेवंकृतांजलिरभाषत ॥ १४॥ ततः । सः । विस्मयाविष्टः ।
हृष्टरोमा । धनंजयः । प्रणम्य । शिरसा । देवं । कृतांजलिः । अभाषत ॥ १४॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेधृतराष्ट्र तिसतैं अनंतर विस्म
यकरिकैव्याप्तहुआ तथापुलकितरोमांचवालाहुआ सो धनंजय तिसनारायणदेवकूं आपणेमस्तककरिकै नमस्कारकरिकै आपणे
दोनोंहस्तजोडिकै यहवचनकहताभया ॥ १४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेराजन् युधिष्ठिरराजाकेराजसूययज्ञवासतैं सर्वराजोंकूंजीतिकै सोअर्जुन धनकूलेआवताभयाहै ॥ यातैंताअर्जुनकूं धनंजयकहेहै ॥ तथा सोअर्जुन
साक्षात् महादेवकेसाथिभी युद्धकरताभयाहै ॥ ऐसा अत्यंतप्रसिद्धपराक्रमवाला तथाअग्निकीन्याई अत्यंततेजस्वी तथाअत्यंतधैर्यवान् सोअर्जुन तिसवि
श्वरूपकेदर्शनतैंअनंतर विस्मय करिकैआविष्टहुआ ॥ अर्थात् तिसअद्भुतरूपकेदर्शनतैंउत्पन्नभयाजो चित्तकाकोईअलौकिकचमत्काररूपविस्मयहै तावि
स्मयकरिकै व्याप्तहुआ ॥ इसीकारणतैंहीं हृष्टरोमाहुआ ॥ अर्थात् ताविस्मयकरिकै पुलकितहुएहैंसर्वशरीरकेरोमांचजिसके ॥ ऐसासोअर्जुन तिसविश्वरूपकेधारण
करणेहारेनारायणदेवकूं भूमिविषेलगायेहुएआपणेमस्तककरिकै अत्यंतश्रद्धाभक्तिपूर्वक नमस्कारकरिकै तथाआपणेदोनोंहस्तोंकूंजोडिकै इसवक्ष्यमाणवचनकूं कह

ताभया इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥ तहां श्रीभगवान् नैं हमारेप्रति जोविश्वरूप दिखायाहै ॥ सोविश्वरूप यद्यपि सर्वलोकोंकरिकै देखणेकूंअशक्यहै तथापि श्री भगवान् नैं प्राप्तकन्येहुएदिव्यचक्षुकरिकै मैंअर्जुन तिसविश्वरूपकूं प्रत्यक्षदेखताहूं ॥ यातैं हमारेकोई अहोभाग्यहैं ॥ इसप्रकार आपणेअनुभवकूं प्रगटकरताहुआं सोअर्जुन श्रीभगवान् केप्रति कहेहै ॥

(मू० श्लो०) अर्जुनउवाच ॥ पश्यामिदेवांस्तवदेवदेहेसर्वास्तथाभूतविशेषसंघान् ॥ ब्रह्माणमीशंकमलासनस्थमृषींश्चसर्वानुरगांश्च दिव्यान् ॥ १५ ॥ पश्यामि । देवान् । तव । देव । देहे । सर्वान् । तथा । भूतविशेषसंघान् । ब्रह्माणम् । ईशं । कमलासनस्थम् । ऋषीन् । च । सर्वान् । उरगान् । च । दिव्यान् ॥ १५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेदेव तुमारे ईसविश्वरूपदेहविषे मैंअर्जुन सर्व देव तावोंकूं देखताहूं तथा स्थावरजंगमरूपभूतोंकेसमूहकूं देखताहूं तथा कमलरूपआसनविषेस्थित सर्वकेनियेंता चतुर्मुखब्रह्माकूं देखताहूं तथा सर्व ऋषियोंकूं देखताहूं तथा दिव्य संपोंकूं देखताहूं ॥ १५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेविश्वरूपकेधारणकरणेहारे नारायणदेव ॥ तुमारेइसविश्वरूपदेहविषे मैंअर्जुन वसु रुद्र आदित्य इत्यादिकसर्वदेवतावोंकूं देखताहूं ॥ अर्थात् इसदि व्यचक्षुजन्यज्ञानकाविषय करताहूं ॥ याप्रकारका (पश्यामि) इसशब्दकाअर्थ आगेभीसर्वपर्यायोंविषेजानिलेगा ॥ तथा इसतुमारेविश्वरूपदेहविषे मैंअर्जुन स्था वरजंगमरूपसर्वभूतोंकेसमूहकूंभी देखताहूं ॥ और सर्वभूतोंकानियेंता जोचतुर्मुखब्रह्माहै ॥ जोब्रह्मा कमलरूपआसनविषेस्थितहै ॥ अर्थात् पृथिवीरूपकमलका कर्णिकारूपजोसुमेरुहै तासुमेरुआसनविषेस्थितहै ॥ अथवा विष्णुभगवान् केनाभिकमलरूपआसनविषेस्थितहै ॥ ऐसेचतुर्मुखब्रह्माकूंभी मैंअर्जुन तुमारेइसविश्व रूपदेहविषेदेखताहूं ॥ तथा वसिष्ठतैंआदिलैंके जेब्रह्माकेपुत्ररूप नारदसनकादिकऋषिहैं तिनसर्वऋषियोंकूंभी मैं तुमारेइसविश्वरूपदेहविषेदेखताहूं ॥ तथा इसलोक विषेअप्रसिद्ध जेवासुकीआदिकसर्पहैं तिनसर्पोंकूंभी मैंतुमारेइसविश्वरूपदेहविषेदेखता हूं इति ॥ १५ ❀ ॥ तहां जिस भगवान् केविश्वरूपदेहविषे सोअर्जुन इनपूर्वउक्तसर्वपदार्थोंकूं देखताभयाहै ॥ तिसीविश्वरूपदेहकूं सोअर्जुन अब अनेकअद्भुतविशेषणोंकरिकै वर्णनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) अनेकबाहूदरवक्रनेत्रं पश्यामित्वांसर्वतोऽनंतरूपम् ॥ नांतंनमध्यंनपुनस्तवादिपश्यामिविश्वेश्वरविश्वरूप ॥ १६ ॥ अनेकबाहूदरवक्रनेत्रं । पश्यामि । त्वां । सर्वतः । अनंतरूपं । नैं । अंतं । नैं । मध्यं । नैं । पुनः । तव । आदिं । पश्यामि । विश्वेश्वर । विश्वरूप ॥ १६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेसर्वविश्वकाईश्वर हेसर्वविश्वरूप अनेकहैंबाहूउदरमुखनेत्रजिसविषे तथासैं

वेत्र अनंतहैरूपजिसके ऐसेतुमारेकूं मैंअर्जुन देखताहूं पुनः तुमारे अंतकूंभी मैं नहीं देखताहूं तथामध्यकूंभीनहीं देखताहूं तथा आदिकूंभी नहींदेखताहूं ॥ १६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेसर्वविश्वकाईश्वर तथाहेसर्वविश्वरूप श्रीभगवान् ॥ अनेकहैंबाहुजिसविषे तथाअनेकहैंउदरजिसविषे तथाअनेकहैंमुखजिसविषे तथाअनेकहैंनेत्र जिसविषे ऐसेतुमारेविश्वरूपकूं मैंअर्जुन इसदिव्यचक्षुकरिकैदेखताहूं ॥ तथा सर्वत्रअनंतहैरूपजिसके ऐसेतुमारेकूं मैं देखताहूं ॥ तथा तुमारे अवसानरूपअंतकूंभी मैं देखतानहीं ॥ तथा तुमारे मध्यकूंभी मैं देखतानहीं ॥ तथा तुमारे आदिकूंभी मैं देखतानहीं ॥ काहेतैं जोपदार्थ देशकरिकै अथवा कालकरिकै परिच्छिन्न होवैहैं ॥ तिसपदार्थकाहीं आदि मध्य अंतहोवैहै ॥ और आपतैं सर्वदेशविषे तथासर्वकालविषे विद्यमानहो ॥ यातैं आपका सोआदिमध्यअंत संभवतानहीं ॥ ईहां (हेविश्वेश्वर हेविश्वरूप) यहजोदोसंबोधन भगवान्के अर्जुननैं कथनकरेहैं ॥ सो तिसकालविषे अतिसंभ्रमतैं कथनकरेहैं इति ॥ १६ ॥ * ॥ अब अर्जुन तिसीविश्वरूपभगवान्कूं अन्यप्रकारतैं अनेकविशेषणोंकरिकैयुक्तकथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) किरीटिनंगदिनंचक्रिणंचतेजोराशिसर्वतोदीप्तिमंतम् ॥ पश्यामित्वांदुर्निरीक्षंसमंतादीप्तानलार्कद्युतिमप्रमेयम् ॥ १७ ॥
किरीटिनम् । गदिनम् । चक्रिणम् । च । तेजोराशिम् । सर्वतः । दीप्तिमंतम् । पश्यामि । त्वाम् । दुर्निरीक्षम् । समंतात् । दीप्तान
लार्कद्युतिम् । अप्रमेयम् ॥ १७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् किरीटकंधारणकरणेहारे तथागदाकंधारणकरणेहारे तथाचक्रकूं
धारणकरणेहारे तथा तेजकासमूहरूप तथासर्वओरतैं प्रकाशमान तथादेखणेकूंअशक्य तथाप्रकाशमानअग्निसूर्यकेप्रभाकीन्यांई
प्रभावले तथाअप्रमेय ऐसेतुमारेकूं मैंअर्जुन सर्वओरतैं देखताहूं ॥ १७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् कैसाहैसोआपकाविश्वरूप ॥ मस्तकऊपरि मुकुटकंधारणकरणेहाराहै ॥ तथा हस्तोंविषे गदाकंधारणकरणेहाराहै ॥ तथा चक्रकंधारण
करणेहाराहै ॥ तथा सर्वओरतैं प्रकाशमानहै ॥ तथा सर्वतेजकासमूहरूपहै ॥ इसकारणतैहीं दुर्निरीक्षहै ॥ अर्थात् इसदिव्यचक्षुतैंविना देखणेकूंअशक्यहै ॥ ईहां
(दुर्निरीक्ष्यम्) इसप्रकारकाजो मूलश्लोकविषेपाठहोवै ॥ तौ दुःख यहशब्द निषेधकावाचकजानना ॥ अर्थात् सोआपकास्वरूप नहींदेखयाजावैहै ॥ पुनःकैसाहै
सोविश्वरूप ॥ अत्यंतदीप्तिमान्जोअग्निसूर्यहैं ॥ तिनअग्निसूर्यदोनोंकेप्रभाकीन्यांईहै प्रभाजिसकी ॥ तथा अप्रमेयहै ॥ अर्थात् इसप्रकारका यहस्वरूपहै याप्रका
रतैं निश्चयकरणेकूंअशक्यहै ॥ ऐसेस्वरूपकंधारणकरणेहारेतुमारेकूं सर्वओरतैं मैंअर्जुन इसदिव्यचक्षुकरिकैदेखताहूं ॥ यद्यपि (दुर्निरीक्ष्यम्) इसवचनकरिकै

अर्जुननै ताविश्वरूपकेदर्शनकानिषेध कथनक-याथा ॥ और (पश्यामि) इसवचनकरिकै ताविश्वरूपकादर्शन कथनक-याहै ॥ यातैं पूर्वउत्तरवचनकाविरोध प्राप्तहोवैहै ॥ तथापि अधिकारीकेभेदतैं तेदोनोवचन संभवैहैं ॥ तहां दिव्यचक्षुतैरहितपुरुषकूंतौ सोविश्वरूपदेखणेकूं अशक्यहै ॥ और दिव्यचक्षुवालेपुरुषकूं सो विश्वरूप देखणेकूं शक्यहै इति ॥ १७ ॥ * ॥ हेभगवन् बुद्धिमान्पुरुषोंकरिकैभी तर्कनाकरणेकूंअशक्य ऐसाजोतुमारा निरतिशयऐश्वर्यहै ॥ ताऐश्वर्यके दर्शनतैंमैंअर्जुन आपपरमेश्वरकूंइसप्रकारका मानताहूं ॥ इसवार्ताकूं अर्जुन कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् ॥ त्वमव्ययः शाश्वत धर्म गोप्ता सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे ॥ १८ ॥
 त्वम् । अक्षरं । परमं । वेदितव्यं । त्वम् । अस्य । विश्वस्य । परं । निधानं । त्वम् । अव्ययः । शाश्वत धर्म गोप्ता । सनातनः । त्वं । पुरुषः । मतः । मे ॥ १८ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हेभगवन् आपहीं परम अक्षरहो तथा आपहीं जानणेयोग्यहो तथा आपहीं इस जगत्का परम आश्रयहो तथा आपहीं अव्ययहो तथा अनादिधर्मकापालकहो तथा आपहीं सनातन परमात्मापुरुष हमारेकूं समेतहो ॥ १८ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् । (एतद्वैतदक्षरंगार्गि ।) इत्यादिकश्रुतिनै अक्षररूपकरिकै प्रतिपादनक-याहुआ तथा । (अव्यक्तात्पुरुषः परः) इत्यादिकश्रुतिनै सर्वतैंपर रूपकरिकै प्रतिपादनक-याहुआ जोनिर्गुणब्रह्महै ॥ सोनिर्गुणब्रह्मरूपभी आपहींहो ॥ जिसकारणतैं आप निर्गुणब्रह्मरूपहो ॥ इसकारणतैं आपहीं मुमुक्षुनेनजौ वेदांतशास्त्रकेश्वरणादिकोंकरिकै जानणेयोग्यहो ॥ तथा आपहीं इससर्वजगत्का परमआश्रयहो ॥ अर्थात् इससर्वकल्पितप्रपंचका अधिष्ठानरूपहो ॥ इसीकारण तैंहीं आप अव्ययहो ॥ अर्थात् नित्यहो ॥ तथा नित्यवेदकरिकै प्रतिपादितहोणेतैं शाश्वतरूपजोवर्णआश्रमकाधर्महै ताधर्मकेभी आपहीं पालनकरणेहारेहो ॥ अथवा (शाश्वत धर्मगोप्ता) यहदोपदजानणे ॥ तहां शाश्वत यहपदतौ श्रीभगवान्कासंबोधनहै ॥ अर्थात् हेशाश्वत हेनित्यरूप ॥ इसपक्षविषे (अव्ययः) इ सपदका विनाशतैरहित यहअर्थकरणा ॥ इसीकारणतैंहीं जोसनातन परमात्मादेवरूपपुरुषहै ॥ सोपरमात्मापुरुषभी आपकूंहीं मैंमानताहूं इति ॥ १८ ॥ * ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) अनादिर्मध्यांतमनंतवीर्यमनंतबाहुं शशिसूर्यनेत्रम् ॥ पश्यामित्वां दीप्तिहुताश्वक्रं स्वतेजसा विश्वमिदं तपंतम् ॥ १९ ॥
 अनादिर्मध्यांतम् । अनंतवीर्यम् । अनंतबाहुं । शशिसूर्यनेत्रम् । पश्यामि । त्वां । दीप्तिहुताश्वक्रम् । स्वतेजसा । विश्वम् । इदं । तपंतम् ॥ १९ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हेभगवन् उत्पत्तिस्थितिनाशतैरहित तथा अनंतहै प्रभावजिसका तथा अनंतहै बाहुजिसकी तथा चंद्रमासू

यहैनेत्र जिसके तथाप्रज्वलितअग्निहैमुखोंविषेजिसके तथाआपणेतेजकरिकै ईस सर्वविश्वकूं तपायमानकरणेहारा ऐसेआपकेस्वरूप
पकूं मैंअर्जुन देखताहूं ॥ १९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् पुनःसोआपकाविश्वरूपकैसाहै ॥ उत्पत्तितैभीरहितहै ॥ तथा स्थितितैभीरहितहै ॥ तथा विनाशतैभीरहितहै ॥ तथा अपरिमितहै वीर्य क्या
प्रभाव जिसका ॥ तथा अनंतहैबाहुजिसकी ॥ ईहां (अनंतबाहुं) यहशब्द मुखादिकसर्वअवयवोंकीअनंतताका उपलक्षणहै ॥ तथा चंद्रमा सूर्य यहदोनोंहैनेत्र
जिसके ॥ तथा प्रज्वलितअग्निहैमुखजिसका ॥ अथवा प्रज्वलितअग्निहैमुखोंविषेजिसके ॥ तथा आपणेतेजकरिकै इससर्वजगत्कूं तपायमानकरणेहाराहै ॥
ऐसे तुमारेइसविश्वरूपकूं मैंअर्जुन इसदिव्यचक्षुकरिकैदेखताहूं इति ॥ १९ ॥ अब अर्जुन तिस भगवान्केविश्वरूपकी सर्वत्रव्यापकताकूं कथनकरेहै ॥

(मू०श्लो०) व्यावापृथिव्योरिदमंतरंहिव्याप्तंत्वयैकेनदिशश्चसर्वाः ॥ दृष्ट्वाद्भुतंरूपमुग्रंतवेदंलोकत्रयंप्रव्यथितंमहात्मन् ॥ २० ॥
व्यावापृथिव्योः । इदम् । अंतरं । हिं । व्याप्तं । त्वया । एकेनं । दिशः । च । सर्वाः । दृष्ट्वां । अद्भुतं । रूपम् । उग्रं । त्वं । इदं ।
लोकत्रयं । प्रव्यथितं । महात्मन् ॥ २० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेमहात्मन् तैं एकनै हीं स्वर्गपृथिवीके मध्यमें यहअंतरिक्ष
व्याप्तकन्याहै तथा सर्व दिशा व्याप्तकरीहैं तुमारे ईस अद्भुत उग्र रूपकूं देखिकै तीनोंलोक अत्यंतभययुक्तहुएहैं ॥ २० ॥
(इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेमहात्मन् अर्थात् हेसाधुपुरुषोंकूंअभयकीप्राप्तिकरणेहारा विश्वरूपभगवान् ॥ स्वर्ग पृथिवी इनदोनोंकेमध्यविषेस्थित जोयहअंतरिक्षलोकहै ॥
सोअंतरिक्ष तैंएकपरमेश्वरनैहीं व्याप्तकन्याहै ॥ तथा पूर्वपश्चिमादिक सर्वदिशाभी तैं विश्वरूपनैहीं व्याप्तकन्याहैं ॥ ईहां अंतरिक्षका तथादिशाओंका ग्रहण स्थाव
रजंगमरूपसर्वविश्वका उपलक्षणहै ॥ अर्थात् यहस्थावरजंगमरूपसर्वविश्व तैंविश्वरूपपरमेश्वरनैहीं व्याप्तकन्याहै ॥ और जोवस्तु जिसनै व्याप्तकरीताहै ॥ सो
वस्तु तिसकास्वरूपहीहोवेहै ॥ जैसे मृत्तिकानै व्याप्तकन्येहुए घटशरावादिककार्य मृत्तिकास्वरूपहीहोवैहैं ॥ तैसे तैंपरमेश्वरनै व्याप्तकन्याहुआ यहसर्वविश्व तुमारा
हींस्वरूपहै ॥ अर्थात् सर्वविश्वरूप तूंहीहै ॥ तहांश्रुति (ब्रह्मवेदसर्वम्) ॥ अर्थयह ॥ यहसर्वजगत् ब्रह्मरूपहीहैं इति ॥ हेभगवन् तुमारे इसविश्वरूपकूंदेखिकै
तीनलोक भयकरिकै अत्यंतव्यथाकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ अब ताविश्वरूपकेदर्शनविषे भयकीहेतुतासिद्धकरणेवासतै ताविश्वरूपके हेतुगर्भितदोविशेषणोंकूं अर्जुन
कथनकरेहै (अद्भुतम् उग्रम् इति) हेभगवन् कैसाहैसोतुमाराविश्वरूप अद्भुतहै ॥ अर्थात् आपणेदर्शनतैं अत्यंतविस्मयकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ पुनःकैसाहै सोरूप

उग्रहै ॥ अर्थात् महान्तेजस्वीहोनेतें अत्यंतदुःखकरिकेजान्याजावैहै ॥ यातें हेभगवन् अभी इसआपकेविश्वरूपकूं अंतरधानकरौ इति ॥ २० ॥ ❀ ॥ अब मैंपरमेश्वरहीं सर्वपृथिवीकेभारकासंहारकरणेहाराहूं याप्रकारतें आपणेविषे सर्व पृथिवीकेभारकासंहारकरतापणेकूं प्रगटकरणेहारेभगवान् कूं देखिके सोअर्जुन कहेहै ॥

(मू० श्लो०) अमीहित्वासुरसंघाविशंतिकेचिद्भीताः प्रांजलयोगृणांति ॥ स्वस्तीत्युक्त्वामहर्षिसिद्धसंघाः स्तुवंतित्वांस्तुतिभिः पुष्कलाभिः ॥ २१ ॥ अमी । हिं । त्वां । सुरसंघाः । विशंति । केचित् । भीताः । प्रांजलयः । गृणांति । स्वस्ति । ईति । उक्त्वा । महर्षिसिद्धसंघाः । स्तुवंति । त्वां । स्तुतिभिः । पुष्कलाभिः ॥ २१ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् यह देवतावोंकेसमूह तुमारेप्राति हिं प्रवेशकरेहैं तथाकईकपुरुष भयकूं प्राप्तहुए दोनोंहाथोंकूं जोडिके स्तुतिकरेहैं तथा महांऋषिसिद्धपुरुष ईसजगत्कास्वस्तिहोवौ इसप्रकारकावचन कहिके तैंपरमेश्वरकी परिपूर्णअर्थकेबोधक वचनोंकरिके स्तुतिकरेहैं ॥ २१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ भगवन् पृथिवीकेभारकेउत्तारणेवासतै मनुष्यरूपकरिकेअवतारकूं प्राप्तहुए तथादुष्टजनोंकेविनाशकरणेवासतै युद्धकूंकरतेहुए जेयह वसु आदित्य इत्यादिकदेवतावोंकेसमूहहैं ॥ तेसर्वदेवगण तुमारेविषेहीं प्रवेशकरतेहुए हमारेकूं देखणेमेंआवैहैं ॥ इहां (त्वा असुरसंघाः) याप्रकारका पदच्छेदकरिके इसवचनका यहदूसराभीअर्थकरणा ॥ असुरोंकाअंशरूपहोनेतें असुररूप जेयह दुर्योधनादिकहैं ॥ जेदुर्योधनादिरूपअसुरगण इसपृथिवीविषेभाररूपहै ॥ ऐसेदुर्योधनादिक असुरगण दुष्टअदृष्टोंकरिकेप्रेरणाकरेहुए आपणेमरणवासतै तुमारेविषे प्रवेशकरेहैं ॥ जैसे पतंग आपणेमरणवासतै आगिविषे प्रवेशकरेहैं ॥ तथा दोनोंसैनावोंके मध्यविषे केईकपुरुष भीतिहुए अर्थात् भागणेविषेभीअसमर्थहुए आपणेदोनोंहाथजोडिके दूरतैंहीं तुमारीस्तुतिकरेहैं ॥ इसप्रकारतें महान् युद्धकेप्राप्तहुए उत्पातादिकोंकेनिमित्तोंकूं देखिके इससर्वविश्वका स्वस्तिहोवौ अर्थात् रक्षणहोवौ इसप्रकारकेवचनोंकूं कहिके नारदादिकसर्वमहांऋषि तथाकपिलादिकसर्वसिद्ध युद्धकेदेखणे वासतै तहांआयेहुए सर्वविश्वकेविनाशकेनिवृत्तकरणेवासतै परिपूर्णअर्थकेबोधक तथागुणोंकीउत्कृष्टताकूं प्रतिपादनकरणेहारे ऐसेवचनोंकरिके आपपरमेश्वरकी स्तुतिकूंकरेहैं इति ॥ २१ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) रुद्रादित्यावसवोयेचसाध्याविश्वेऽश्विनौमरुतश्चोष्मपाश्च ॥ गंधर्वयक्षासुरसिद्धसंघावीक्षंतेत्वांविस्मिताश्चैवसर्वे ॥ २२ ॥ रुद्रादित्याः । वसवः । ये । च । साध्याः । विश्वे । अश्विनौ । मरुतः । च । ऊष्मपाः । च । गंधर्वयक्षासुरसिद्धसंघाः । वीक्षंते । त्वाम् । विस्मिताः । च । एव । सर्वे ॥ २२ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् जे रुद्रआदित्यहैं तथावसुहैं तथा

साध्यहैं तथाविश्वे देवहैं तथा अश्विनीकुमारहैं तथा मरुतहैं तथा ऊष्मपाहैं तथा गंधर्वयक्षअसुरसिद्धोंकेसमूहहैं तेसर्व हीं तुमारेकूं देखतेहैं तथा विस्मयकंप्राप्तहोवैहैं ॥ २२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् रुद्रहैनामजिनोंका ऐसाजो देवतावोंकासमूहहै ॥ तथा आदित्यहैनामजिनोंका ऐसाजो देवतावोंकासमूहहै ॥ तथा वसुहैनामजिनोंका ऐसाजो देवतावोंकासमूहहै ॥ तथा साध्यहैनामजिनोंका ऐसाजो देवतावोंकासमूहहै ॥ तथा विश्वहैनामजिनोंका ऐसाजो देवतावोंकासमूहहै ॥ तथा दोनों अश्विनी कुमारजोहैं ॥ तथा मरुतहैनामजिनोंका ऐसेजे ओगणपंचास देवताविशेषहैं ॥ तथा ऊष्मपाहै नामजिनोंका ऐसाजो पितरोंकासमूहहै ॥ जेपितर (ऊष्मभागाहि पितरः) इसश्रुतिविषे ऊष्मपानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ तथा गंधर्वोंकेजोसमूहहैं ॥ तथा यक्षोंकेजोसमूहहैं ॥ तथा असुरोंकेजोसमूहहैं ॥ तथा सिद्धोंकेजोसमूहहैं ॥ यहपूर्वउक्तसर्वहीं तैविश्वरूपवालेपरमेश्वरकूं देखतेहैं ॥ तिसअद्भुतरूपकेदर्शनतैअनंतर तेसर्वहीं विस्मयकंप्राप्तहोवैहैं इति ॥ २२ ॥ * ॥ तहांपूर्व वीसमेंश्लोकविषे (लोकत्रयं प्रव्यथितंमहात्मन्) इसवचनकरिकै ताविश्वरूपकेदर्शनतै तीनलोकोंकूं भयकीप्राप्ति कथनकरीथी ॥ अब तिसपूर्वउक्तअर्थका उपसंहारकरेहैं ॥ (मू० श्लो०) रूपंमहत्तेबहुवक्रनेत्रंमहाबाहोबहुबाहूरुपादम् ॥ बहुदंष्ट्राकरालं दृष्ट्वा लोकाः प्रव्यथितास्तथाहम् ॥ २३ ॥ रूपं । महत् । तै । बहुवक्रनेत्रं । महाबाहो । बहुबाहूरुपादं । बहुदंष्ट्राकरालं । दृष्ट्वा । लोकाः । प्रव्यथिताः । तथा । अहम् ॥ २३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेमहाबाहुवालेभगवन् अत्यंतमहान् तथाबहुतहैंमुखनेत्रजिसविषे तथाबहुतहैंबाहूऊरुपाद जिसविषे तथाबहुतहैंउदरजिसविषे तथाबहुतदंष्ट्रावोंकरिकै अतिभयानक ऐसे तुमारे इसविश्वरूपकूं देखकैं सर्वप्राणी तथा मैंअर्जुन व्यथाकूं प्राप्तहोतेभयेहैं ॥ २३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेमहाबाहुवालेविश्वरूपभगवान् ॥ तुमारे इसअद्भुतविश्वरूपकूंदेखिकै सर्वप्राणीभयकरिकै अतिव्यथाकंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ तथा मैंअर्जुनभी तारूपकूंदेखिकै भयकरिकै अतिव्यथाकंप्राप्तहोताभयाहूं ॥ कैसाहैसोतुमारा विश्वरूप महत्है ॥ अर्थात् अत्यंतमहत्परिमाणवालाहै ॥ पुनःकैसाहैसोतुमारारूप ॥ बहुतहैं मुखजिसविषे ॥ तथा बहुतहैंनेत्रजिसविषे ॥ तथाबहुतहैंभुजाजिसविषे ॥ तथा बहुतहैंऊरुजिसविषे ॥ तथा बहुतहैंपादजिसविषे ॥ तथा बहुतहैंउदर जिसविषे ॥ तथा जोरूप बहुतदंष्ट्रावोंकरिकै अत्यंतभयानकहै ॥ ऐसेआपकेरूपकेदेखनेमात्रतैहीं हमारेसहित सर्वप्राणी भयकरिकैपीडितहोतेभयेहैं इति ॥ २३ ॥ * ॥ अब अर्जुन तापरमेश्वरके विश्वरूपविषे शोभायमानपणा स्पष्टकरिकैनिरूपणकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) नभःस्पृशंदीप्तमनेकवर्णव्यात्ताननंदीप्तविशालनेत्रम् ॥ दृष्ट्वाहि त्वांप्रव्यथितांतरात्माधृतिं विंदामि शमंचविष्णो ॥२४॥ नभःस्पृशं । दीप्तम् । अनेकवर्णं । व्यात्ताननं । दीप्तविशालनेत्रं । दृष्ट्वा । हिं । त्वां । प्रव्यथितांतरात्मा । धृतिं । नं । विंदामि शमं । चं । विष्णो ॥२४॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेविष्णु भगवन् संपूर्णआकाशविषे व्यापक तथा अत्यंतप्रज्वलित तथा अनेकहं वर्णजिस विषे तथा विस्फारितहै मुखजिसविषे तथा प्रज्वलितविशालहै नेत्रजिसविषे ऐसे तुमारे कूं देखकै हीं व्यथा कूं प्राप्तहुआ है मनजिसका ऐसामैं अर्जुन धैर्यकूं तथा शमकूं नहीं प्राप्तहोताहूं ॥ २४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेविष्णु अर्थात् हे सर्वत्रव्यापक भगवन् ॥ मै अर्जुन तुमारे कूं देखकै भयकरिकै केवल व्यथामात्रकूं हीं नहीं प्राप्तभयाहूं ॥ किंतु भयकरिकै अत्यंत व्यथा कूं प्राप्तहुआ है अंतरात्मा क्या मन जिसका ऐसामैं अर्जुन तुमारे कूं देखकरिकै हीं धृतिकूं भी नहीं प्राप्तहोताहूं ॥ अर्थात् देह इंद्रियादिक संघातके धारणकरणका सामर्थ्यरूप धैर्यकूं भी नहीं प्राप्तहोताहूं ॥ तथा मनकी स्थिरतारूप शमकूं भी नहीं प्राप्तहोताहूं ॥ कैसा है सो आपका स्वरूप ॥ इस संपूर्ण आकाशरूप अंतरिक्षलोकविषे व्याप्तहोइरहा है अथवा आकाशकी न्यांई सर्वपदार्थों कूं स्पर्शकरिरहा है ॥ पुनः कैसा है सो आपका स्वरूप दीप्त है ॥ अर्थात् महान् अग्निकी न्यांई अत्यंत प्रज्वलित है ॥ पुनः कैसा है सो स्वरूप ॥ अनेकवर्ण है ॥ अर्थात् भयकी प्राप्तिकरणे हारे अनेकरूपों करिकै युक्त है ॥ पुनः कैसा है सो स्वरूप ॥ विस्फारितहुए है मुखजिसविषे ॥ अर्थात् फाड्येहुए है मुखजिसनै ॥ पुनः कैसा है सो स्वरूप ॥ सूर्यमंडलकी न्यांई प्रज्वलित तथा विशाल है नेत्रजिसविषे ॥ ऐसे आपके स्वरूप कूं देखकरिकै हीं भयकरिकै व्यथा कूं प्राप्तहुआ है मनजिसका ऐसामैं अर्जुन धृतिकूं तथा शमकूं प्राप्तहोतानहीं ॥ इहां (हेविष्णो) इस संबोधनकरिकै अर्जुननै विश्वरूप भगवान् की व्यापकता कथन करी ॥ ताकरिकै यह अर्थ बोधन कन्या ॥ जिस कारणतैं आपा विश्वरूप सर्वत्र व्यापक हो ॥ तिस कारणतैं तुमारे करिकै युक्त भयानक देश कूं परित्याग करिकै मै अर्जुन अन्यत्र जागे विषे समर्थनहीं हूं ॥ यातैं यह भयानक विश्वरूप आपनै अंतर्धान कन्या चाहीये इति ॥ २४ ॥ ❀ ॥ अब इस पूर्व उक्त अर्थ कूं हीं पुनः दूसरे प्रकारतैं कथन करताहुआ अर्जुन श्री भगवान् के प्रसन्नता की प्रार्थना करे है ॥

(मू० श्लो०) दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि दृष्ट्वैव कालानलसन्निभानि ॥ दिशोनजानेन लभे च शर्म प्रसीद देवेश जगन्निवास ॥ २५ ॥ दंष्ट्रां करालानि । च । ते । मुखानि । दृष्ट्वा । एवं । कालानलसन्निभानि । दिशः । नं । जाने । नं । लभे । चं । शर्म । प्रसीद । देवेशं । जगन्निवास ॥ २५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हे भगवन् दंष्ट्राओं करिकै भयंकर तथा प्रलयअग्निकेतुल्य तुमारे मुखों कूं देखकरिकै हीं मै

अर्जुन दिशावोंकूंभी नहीं जानताहूं तथा सुखकूंभी नहीं प्राप्तहोताहूं यातैं हेदेवेश हेजगन्निवास हमारे ऊपरि प्रसन्नहोवौ ॥ २५ ॥
(इतिपदार्थः) ॥

॥टीका॥हेभगवन् दंष्ट्रावोंकरिकैअत्यंतविकरालहोणेतैं भयकीप्राप्तिकरणेहारे तथाप्रलयकालके अग्निकेतुल्य ऐसेजेआपेकमुखहैं तिन आपकेमुखोंविषे यद्यपि मैंअर्जुन प्राप्तहुआनहीं ॥ तथापि तिनआपकेमुखोंकूं केवलदेखिकरिकैंहीं भयकेवशतैं मैंअर्जुन पूर्व अपर इत्यादिकभेदकरिकै दिशावोंकूंभी जानतानहीं ॥ इसी कारणतैंहीं मैंअर्जुन तुमारेदर्शनहुएभी सुखकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ यातैं हेदेवेश हेजगन्निवास आप हमारेऊपरि प्रसन्नहोवौ ॥ जिसकरिकैभयतैरहितहोइकै मैंअर्जुन तुमारेदर्शनजन्यसुखकूं प्राप्तहोवउ ॥ तहां अन्यकिसीकी नहींअपेक्षाकरिकै जोआपेहींप्रकाशमानहोवै ताकानाम देवेशहै ॥ और आपणीसमीपतामात्रतैं जोसर्वकूं चेष्टाकरावै ताकानाम ईशहै ॥ जोदेवहोवै सोईहीं ईशहोवै ताकानाम देवेशहै ॥ अर्थात् स्वप्रकाशरूप सर्वकेप्रेरककानाम देवेशहै ॥ अथवा इंद्रादिकसर्वदेवतावोंकाजोईशहोवै ताकानाम देवेशहै ॥ और इससर्वजगत्का जोनिवासहोवै अर्थात् अधिष्ठानहोवै ताकानाम जगन्निवासहै इति ॥ २५ ॥ * ॥ तहांपूर्व इसएकादशेअध्यायके सप्तमेश्लोकविषे (ममदेहेगुडाकेशयच्चान्यद्द्रष्टुमिच्छसि) इसवचनकरिकै श्रीभगवान् नैं अर्जुनकेप्रति यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ सर्वदा हमारेजयकूं तथादुर्योधनादिकोंकेपराजयकूं देखनाहीं तुमारेकूंइष्टहै ॥ तिसजयपराजयकूंभी तूं इसहमारेदेहविषेहींदेख इति ॥ अब तिसआपणेजयकूं तथादुर्योधनादिकोंकेपराजयकूंभी मैंदेखताहूं इसअर्थकूं अर्जुन पांचश्लोकोंकरिकै कथनकरैहैं ॥

(मू० श्लो०) अमीचत्वांधृतराष्ट्रस्यपुत्राःसर्वेसहैवावनिपालसंवैः ॥ भीष्मोद्रोणःसूतपुत्रस्तथासौसहास्मदीयैरपियोधमुख्यैः ॥
॥ २६ ॥ वक्राणितेत्वरमाणाविशंतिदंष्ट्राकरालानिभयानकानि ॥ केचिद्विलग्नादशनांतरेषुसंहृश्यंतेचूर्णितैरुत्तमांगैः ॥ २७ ॥
अमी ! च । त्वां । धृतराष्ट्रस्य । पुत्राः । सर्वे । सह । एव । अवनिपालसंवैः । भीष्मः । द्रोणः । सूतपुत्रः । तथा । असौ । सह ।
अस्मदीयैः । अपि । योर्धमुख्यैः ॥ वक्राणि । ते । त्वरमाणाः । विशंति । दंष्ट्राकरालानि । भयानकानि । केचित् । विलग्नाः । दशनांतरेषु । संहृश्यंते । चूर्णितैः । उत्तमांगैः ॥ २६ ॥ २७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् पुनः यह धृतराष्ट्रके दुर्योधनादिकपुत्र सर्व राजावों केसमूह सहित ही अत्यंतशीघ्रतावालेहुएतैं परमेश्वरविषे प्रवेशकरैहैं तथाभीष्म तथाद्रोण तथा यह कर्ण यहतीनों हमारेसंबंधी रूपभी मुख्ययोधावों सहित तुमारेविषेप्रवेशकरैहैं हेभगवन् दंष्ट्रावोंकरिकैविकराल तथा अतिभयानक ऐसेतुमारे मुखोंविषे यहहु

यौधनादिकसर्व शीघ्रहीं प्रवेशकरें तहां केईकैयोधा चूर्णहुए शिरोकैरि कौविशिष्टहुए दांतोंकी मध्यसंधियोंविषे लंग्येहुए देखणे
मैं आवैं ॥ २६ ॥ २७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे भगवन् यह धृतराष्ट्रके दुर्योधनादिकसर्वपुत्र शल्यराजातैं आदिलैके सर्वराजावोंसहितहीं अत्यंतशीघ्रतातैं तैपरमेश्वरविषे प्रवेशकरतेहैं ॥ हे भगवन् केवल यह दुर्योधनादिकहीं तुमारेविषे प्रवेशनहीं करते ॥ किंतु सर्वलोकोनैं अजेयतारूपकरिकैसंभावनाक-याहुआ जोयह भीष्मपितामहहै तथाद्रोणाचार्यहै तथासर्वकालविषे हमाराद्वेषी जोयह सूतपुत्रकर्णहै ॥ यहतीनोंभी हमारेसंबंधीरूप धृष्टद्युम्नादिकमुख्ययोधावोंसहित तैपरमेश्वरविषे प्रवेशकरें ॥ अब तिसविश्वरूपभगवान् विषे तिनदुर्योधनादिकोंके प्रवेशकाद्वार कथनकरें (वक्राणिइति) हे भगवन् जेआपकेमुख दंष्ट्रावोंकरिकैअत्यंतविकरालहैं ॥ याकारणतैंहीं तेमुख अत्यंतभयानकहैं ॥ ऐसेआपकेमुखोंविषेहीं यहदुर्योधनादिकसर्व अत्यंतशीघ्रतातैं प्रवेशकरें ॥ तिनप्रवेशकरणेहा-योंविषेभी केईकयोधातौ चूर्णभावकूप्राप्तहुए मस्तकोंकरिकैयुक्तहुए आपकेदांतोंकेमध्यसंधियोंविषे लंग्येहुए हमनै देखीतेहैं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ इनदोनोंश्लोकोंकेपदोंकी (अमीधृतराष्ट्रस्यपुत्राः त्वांविशंति भीष्मद्रोणादयःतेवक्राणिविशंति) याप्रकारतैं योजनाकरिकै यहअर्थ कथनक-याहै ॥ धृतराष्ट्रके अत्यंतपापिष्ठ जेदुर्योधनादिकपुत्रहैं ॥ तेदुर्योधनादिकपापिष्ठतौ तीनलोकरूपशरीरवालेआपपरमेश्वरविषेहीं प्रवेशकरें ॥ अर्थात् तेदुर्योधनादिकआपणेपापकर्मकेअनुसार तैविश्वरूपभगवान्केपायुस्थानविषे स्थितनरकोंकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ और यहभीष्मद्रोणादिकतौ आपपरमेश्वरकेभक्तहैं ॥ यातैं ॥ यहभीष्मादिकतौ आपपरमेश्वरके जिनमुखोंतैं अग्नि ब्राह्मणदेवता उत्पन्नहुएहैं ॥ तिनमुखोंविषेहीं प्रवेशकरें ॥ इसप्रकार दुर्योधनादिकोंके तथाभीष्मादिकोंके गतिकीविलक्षणताकेबोधनकरणेवास्तै इसप्रकारतैं पदोंकाअन्वयकरणा युक्तहै ॥ इति ॥ २६ ॥ २७ ॥ * ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे दुर्योधनादिकसर्वराजावोंका भगवान्केमुखोंविषेप्रवेश कथनक-या ॥ सोप्रवेश दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकप्रवेशतौ अबुद्धिपूर्वक होवैहै ॥ दूसराप्रवेश बुद्धिपूर्वक होवैहै ॥ तहां नजानिकैजोप्रवेशहै ताकूं अबुद्धिपूर्वकप्रवेशकहैहैं ॥ और जानिकैजोप्रवेशहै ताकूं बुद्धिपूर्वकप्रवेशकहैहैं ॥ तहां भगवान्केमुखोंविषे तिनराजावोंके अबुद्धिपूर्वकप्रवेशविषे अर्जुन दृष्टांतकूं कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) यथानदीनांबहवोबुवेगाः समुद्रमेवाभिमुखाद्रवन्ति ॥ तथा तवामीनरलोकवीरविशंतिवक्राण्यभितोज्ज्वलन्ति ॥ २८ ॥
यथा । नदीनां । बहवः । अंबुवेगाः । समुद्रम् । एव । अभिमुखाः । द्रवन्ति । तथा । तव । अमी । नरलोकवीराः । विशंति । वक्राणि । अभितः । ज्ज्वलन्ति ॥ २८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हे भगवन् जैसे नदीयोंके बहुत जलोंकेवेग समुद्रकेअभिमुखहुए समुद्रकूं ही प्रवेश करेहैं तैसें यह मनुष्यलोककेवीर तुमारे सर्वओरतैं प्रकाशमान मुखोंकूंहीं प्रवेशकरैहै ॥ २८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे भगवन् जैसे अनेक मार्गों विषे प्रवृत्त हुई जेश्री गंगायमुनादिक नदियाँ हैं तिन नदीयों के जे बहुत जलों के वेग हैं अर्थात् जिन जलों के जे वेग वाले प्रवाह हैं ॥ ते बहुत जलों के प्रवाह समुद्र के अभिमुख हुए तिस समुद्र विषे ही अबुद्धि पूर्वक प्रवेश करे हैं ॥ तैसे इस मनुष्य लोक विषे शूरवीर जे दुर्योधनादिक राजे हैं ॥ ते यह दुर्योधनादिक राजे तै परमेश्वर के सर्व ओर तै प्रकाशमान मुखों विषे अबुद्धि पूर्वक प्रवेश करे हैं ॥ तहां कितने की पुस्तकों विषे (अभितोज्वलंति) इस वचन के स्थान विषे (अभिविज्वलंति) या प्रकार का भी पाठ होवै है ॥ इस प्रकार के पाठ हुए भी सो पूर्व उक्त अर्थ ही जानना इति ॥ २८ ॥ * ॥ अब श्री विश्वरूप भगवान् के मुखों विषे तिन राजा वों के बुद्धि पूर्वक प्रवेश विषे अर्जुन दृष्टांत कूं कथन करे है ॥

(मू० श्लो०) यथा प्रदीप्तं ज्वलनं पतंगा विशंति नाशाय समृद्धवेगाः ॥ तथैव नाशाय विशंति लोकास्तवापि वक्राणि समृद्धवेगाः ॥ २९ ॥

यथा । प्रदीप्तं । ज्वलनं । पतंगाः । विशंति । नाशाय । समृद्धवेगाः । तथा । एव । नाशाय । विशंति । लोकाः । तैव । अपि । वक्राणि । समृद्धवेगाः ॥ २९ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हे भगवन् जैसे पतंग अत्यंत वेग वाले हुए आपणे नाश वासतै प्रज्वलित अग्नि विषे प्रवेश करे है तैसे ही यह दुर्योधनादिक भी अत्यंत वेग वाले हुए आपणे नाश वासतै तुमारे मुखों विषे प्रवेश करे है ॥ २९ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे भगवन् जैसे पतंग अत्यंत वेग वाले हुए आपणे मरण वासतै प्रज्वलित अग्नि विषे बुद्धि पूर्वक प्रवेश करे हैं ॥ तैसे यह दुर्योधनादिक सर्व राजे भी अत्यंत वेग वाले हुए आपणे मरण वासतै तै परमेश्वर के मुखों विषे बुद्धि पूर्वक प्रवेश करे हैं इति ॥ २९ * ॥ तहां पूर्व युद्ध की कामना वाले राजा वों का भगवान् के मुखों विषे प्रवेश का प्रकार कथन कन्या ॥ अब तिस प्रवेश काल विषे श्री भगवान् के प्रवृत्तिके प्रकार कूं तथा भगवान् के दीप्ति रूप प्रकाश के प्रवृत्तिके प्रकार कूं अर्जुन कहे है ॥

(मू० श्लो०) लेलिह्यसे ग्रसमानः समंताल्लोकान्समग्रान्वदनैर्ज्वलद्भिः ॥ तेजोभिरापूर्यजगत्समग्रं भासस्तवोग्राः प्रतपंति विष्णो ॥ ३० ॥

लेलिह्यसे । ग्रसमानः । समंतात् । लोकान् । समग्रान् । वदनैः । ज्वलद्भिः । तेजोभिः । आपूर्य । जगत् । समग्रम् । भासः । तैव । उग्राः । प्रतपंति । विष्णो ॥ ३० ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हे विष्णु भगवान् संपूर्ण लोकों कूं ग्रास करता हुआ तूं आपणे प्रज्वलित मुखों करिके सर्व ओर तै आस्वादन करता है इस समग्रं जगत् कूं आपणी दीप्ति यों करिके सर्व ओर तै पूर्ण करिके या कारण तै तुमारी ते उग्र दीप्ति यां संताप कूं उत्पन्न करे हैं ॥ ३० ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे विष्णु अर्थात् हे सर्व व्यापक विश्वरूप भगवान् इस प्रकार अत्यंत वेग करिके तुमारे मुख विषे प्रवेश करते हुए जे दुर्योधनादिक सर्व राजे हैं ॥ तिन सर्व राजा

वोंकूं तूं ग्रासकरताहुआ अर्थात् तिनआपणेमुखोंद्वारा आपणेउदरविषेप्रवेशकरावताहुआ तिनआपणेप्रज्वलितमुखोंकरिकै सर्वओरतैंआस्वादनकरेहैं ॥ अर्थात् जैसे यहमनुष्य कोईस्वादुवस्तुकूंभक्षणकरिकै आपणीजिह्वाकरिकै तालुओष्ठादिकोंकूंचाटेहैं ॥ तैसे तूंपरमेश्वरभी तिनदुर्योधनादिकराजावोंकूंभक्षणकरिकै आपणी जिह्वाकरिकै तालुओष्ठादिकोंकूंचाटेहैं ॥ क्याकरिकै ॥ आपणेदीप्तिरूपतेजोंकरिकै इससमग्रजगत्कूं सर्वओरतैं परिपूर्णकरिकै ॥ हेभगवन् जिसकारणतैं तूं आपणीदीप्तियोंकरिकै इससर्वजगत्कूं सर्वओरतैं परिपूर्णकरेहैं ॥ तिसकारणतैं तेतुमारी अत्यंततीव्र दीप्तियां प्रज्वलितअग्निकीन्यांई संतापकूंउत्पन्नकरेहैं इति ॥ ॥ ३० ॥ ❀ ॥ इसप्रकार तिनभगवान्कीदीप्तियोंकरिकै व्याकुलहुआअर्जुन यहसाक्षात्परिपूर्णभगवान्हे याप्रकारतैं भगवान्केस्वरूपकानहींस्मरणकरिकै भगवान्केप्रति कहेहैं ॥

(मू० श्लो०) आख्याहिमेकोभवानुग्ररूपोनमोस्तुतेदेववरप्रसीद ॥ विज्ञातुमिच्छामिभवंतमाद्यंनहिप्रजानामितवप्रवृत्तिम् ॥ ३१ ॥
 आख्याहि । मे । कः । भवान् । उग्ररूपः । नमः । अस्तु । ते । देववर । प्रसीद । विज्ञातुम् । ईच्छामि । भवंतम् । आद्यम् ।
 न । हि । प्रजानामि । तव । प्रवृत्तिम् ॥ ३१ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् ऐसेउग्ररूपवाले आप कौनहो यहवार्ता हमारे तांई कथनकरौ हेसर्वदेवतावोंविषेश्रेष्ठ तुमारेतांई हमारा नमस्कार होवैउ आप प्रसन्नहोवौ मैंअर्जुन सर्वकेकारणरूप तुमारेकूं जानणेकी ईच्छाकरताहूं जिसकारणतैं तुमारी चेष्टाकूं मैं नहीं जानताहूं ॥ ३१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ उग्रहै क्या अत्यंतक्रूरहै रूप क्या आकार जिसका ताकानाम उग्ररूपहै ॥ अथवा प्रलयकालविषे सर्वजगत्कासंहारकरणेहाराजोरुद्रहै ताकानाम उग्रहै ॥ ताउग्रकेरूपकीन्यांईहै रूप क्या आकार जिसका ताकानाम उग्ररूपहै ॥ अथवा उग्रहै क्या सर्वलोकोंकूंभयकीप्राप्तिकरणेहाराहै रूपजिसका ताकानाम उग्ररूपहै ॥ अथवा उग्रहै क्या क्रूरहै रूप क्या कर्म जिसका ताकानाम उग्ररूपहै ॥ ऐसे उग्ररूपवाले आप कौनहो ॥ अर्थात् प्रलयकालकेरुद्रहो ॥ अथवा प्रलयकालकीअग्निहो ॥ अथवा महान्मृत्युहो ॥ अथवा कालांतकहो ॥ अथवा परमपुरुषहो ॥ अथवा इनसर्वोंतैंकोईअन्यहो ॥ जोअभी आपकास्वरूप है ॥ सोस्वरूप मैंअर्जुनकेतांई आप रूपाकरिकै कथनकरौ ॥ याकारणतैंहीं मैंअर्जुनका आपसर्वजगत्केगुरुरूपपरमेश्वरकेतांई नमस्कारहोवै ॥ हेसर्वदेवतावों विषेश्रेष्ठभगवान् आप हमारेऊपरि प्रसादकरौ ॥ अर्थात् क्रूरताकापरित्यागकरिकै प्रसन्नहोवौ हेभगवन् सर्वजगत्काकारणरूपजोआपहो ॥ तिसकारणरूपआप परमेश्वरकूं मैंअर्जुन विशेषरूपतैं जानणेकीईच्छाकरताहूं ॥ शंका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकास्वरूपतों हमारीचेष्टाकेदर्शनतैंहीं जानणेकूशक्यहै ॥ यातैं (कोभवा

न) यहतुमाराप्रश्न संभावतानहीं ॥ ऐसीभगवान् कीशंकाकेहुए अर्जुन कहेहै (नहिप्रजानामिइति) हेभगवन् जिसकारणतैं मैंअर्जुन आप परमेश्वरकासखाहुआ भी आपकीचेष्टारूपप्रवृत्तिकूंभी जानतानहीं ॥ इसकारणतैं आपहीं आपकास्वरूप हमारेप्रति कथनकरौ इति ॥ ३१ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार अर्जुनकरिकेप्रार्थना कन्याहुआ श्रीभगवान् जोआपणास्वरूपहैं तथाजिसकार्यकेकरणेवासतैं आपणीप्रवृत्तिहै यहसर्ववार्त्तातीनश्लोकोंकरिके अर्जुनकेप्रति कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) श्रीभगवानुवाच॥ कालोस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः ॥ ऋतेऽपित्वान भविष्यन्ति सर्वे ये वस्थिताः प्रत्य नोकेषु योधाः ॥ ३२ ॥ कालः । अस्मि । लोकक्षयकृत् । प्रवृद्धः । लोकान् । समाहर्तुम् । इह । प्रवृत्तः । ऋते । अपि । त्वा । न । भविष्यन्ति । सर्वे । ये । अवस्थिताः । प्रत्यनोकेषु । योधाः ॥ ३२ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सर्वलोकोंकासंहारकर्त्ता तथा अत्यंत वृद्धिकूं प्राप्तहुआ कालरूपपरमेश्वर मैंहूं तथा इसकालविषे दुर्योधनादिकोंकूं भक्षणकरणेवासतैं प्रवृत्तहुआहूं यातैं प्रतिपक्षी योंकी सेनावोंविषे जे योधा स्थितहैं तेसर्वयोधा तुमारे युद्धरूप व्यापारतैं विना भी नहीं विद्यमानहोवेंगे ॥ ३२ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन भूमिविषेभाररूपजेप्राणीहै ॥ तिनदुष्टप्राणीयोंकेनाशकरणेहारा अथवा प्रलयकालविषे सर्वप्राणीयोंकेनाशकरणेहारा तथामहान् वृद्धिकूं प्राप्तहुआ क्रियाशक्तिउपहितकालरूपपरमेश्वर मैं हूं ॥ इसप्रकार आपणे स्वरूपकूं कथनकरिके श्रीभगवान् आपणीप्रवृत्तिकूं कथनकरेहै (लोकान् इति) हेअर्जुन जिसकार्यकेकरणेवासतैं मैंभगवान् अभीप्रवृत्तहुआहूं ॥ तिसकूं तूं श्रवणकर ॥ भूमिविषेभाररूपजेदुर्योधनादिकलोकोंकूं भक्षणकरणेवासतैं इसलोकविषे मैं प्रवृत्तहुआहूं ॥ शंका ॥ हेभगवन् मैंअर्जुनकीप्रवृत्तितैंविना आप इनदुर्योधनादिकोंकूं कैसे नाशकरौंगे ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ॥ (ऋतेऽपित्वा इति) हेअर्जुन तुमारेतैंविनाभी अर्थात् तुमारेयुद्धरूपव्यापारतैंविनाभी केवलमैपरमेश्वरकेव्यापारमात्रकरिकेहीं यहभीष्मद्रोणकर्णादिकसर्व योधानाशकूं प्राप्तहोवेंगे ॥ तथा इसदुर्योधनकीसेनाविषे इनभीष्मद्रोणादिकोंतैंभिन्न दूसरेभी जितनैकीयोधास्थितहैं ॥ तेसर्वहोंयोधा मैंपरमेश्वरनैहीं हननकरी राखेहैं ॥ यातैं तिनोकेहननकरणेविषे तैंअर्जुनके युद्धरूपव्यापारका कोईअत्यंत जरूरनहींहै ॥ तुमारेव्यापारतैंविनाहीं यहदुर्योधनादिकसर्व नाशहोवेंगे इति ॥ ३२ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् हमारे युद्धरूपव्यापारतैंविनाहीं जोकदाचित् यहदुर्योधनादिक नाशहोतेहोवें ॥ तौ आप बारंबार हमारेकूं युद्धकरणे विषे किसवासतैं प्रवृत्तकरतेहो ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं ॥

(मू० श्लो०) तस्मात्त्वमुत्तिष्ठयशोलभस्वजित्वाशत्रुभुंक्ष्वराज्यंसमृद्धम् ॥ मयैवेतेनिहताःपूर्वमेवनिमित्तमात्रंभवसंव्यसाचिन् ॥
 ॥३३॥तस्मात् । त्वम् । उत्तिष्ठ । यशः । लभस्व । जित्वा । शत्रून् । भुंक्ष्व । राज्यं । समृद्धं । मया । एव । एते । निहताः । पूर्वम् ।
 एव । निमित्तमात्रं । भव । संव्यसाचिन् ॥ ३३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तिसकारणतै तूं युद्धेवासतैउद्यमवालाहोउ तथा
 यशकूं प्राप्तहोउ तथाशत्रुवोंकूं जितकै निष्कंटकं राज्यकूं भोगं हेसंव्यसाचिन् यहतुमारेशत्रु तुमारियुद्धतैपूर्व हीं मैपरमेश्वरनै हीं
 हननकरिछोडेहैं तूंकेवल निमित्तमात्र होउ ॥ ३३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसकारणतै तुमारियुद्धरूपव्यापारतैविनाभी यहभीष्मद्रोणादिक अवश्यकरिकै नाशकूं प्राप्तहोवेंगे ॥ तिसकारणतै तूंअर्जुन अभी युद्धकरणे
 वासतै उद्यमवालाहोउ ॥ तायुद्धविषे इनभीष्मद्रोणादिकोंकूंहननकरिकै तूं यशकूं प्राप्तहोउ ॥ अर्थात् जेभीष्मद्रोणादिक इंद्रादिकदेवतावोंकरिकैभी दुर्जयथे ॥
 तेभीष्मद्रोणादिकअतिरथी इसअर्जुननै शीघ्रहीं जयकरिलीये ॥ याप्रकारकेयशकूंहीं तूं प्राप्तहोउ ॥ जिसकारणतै इसप्रकारकायश महान्पुण्यकर्मोंकरिकै
 प्राप्तहोवैहै ॥ तिसकारणतै ऐसेयशकीप्राप्तिवासतै तूं इसयुद्धविषेप्रवृत्तहोउ ॥ अर्थात् तुमारेकूंइसप्रकारकेमहान्यशकीप्राप्तिकरणेवासतैहीं मैभगवान् तुमारेकूं
 इसयुद्धविषेप्रवृत्तकरताहूं ॥ कोई तुमारेयुद्धतैविना यहभीष्मद्रोणादिक नहींनाशहोवेंगे इसवासतै मै तुमारेकूं युद्धविषेप्रवृत्त करतानहीं ॥ हेअर्जुन इनशत्रुवों
 केमारणेकरिकै तुमारेकूं केवल यशकीहींप्राप्तिनहींहोवेंगी ॥ किंतु इनदुर्योधनादिकशत्रुवोंकूं विनाहींप्रयत्नतै जयकरिकैसर्वऐश्वर्यसंपन्न निष्कंटकराज्यकूंभी तूं
 भोग ॥ शंका ॥ हेभगवन् इनभीष्मद्रोणादिकअतिरथीयोधावोंकेविद्यमानहुए तिनदुर्योधनादिकशत्रुवोंकाजयकरणा अत्यंतदुर्लभहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाके
 निवृत्तकरणेवासतै श्रीभगवान्कहेहै (मयैवेतेइति) हेअर्जुन तुमारेयुद्धरूपव्यापारतैपूर्वहीं यहभीष्मद्रोणादिक कालरूपमैपरमेश्वरनैहीं आयुषतैरहितकरिराख्येहैं केवल
 तुमारेकूं लोकविषेयशकीप्राप्तिकरणेवासतै यहभीष्मद्रोणादिकसर्वयोधा हमनै रथतैनीचैगिडायेनहीं ॥ यातै हेसंव्यसाचिन् तूं केवल निमित्तमात्रहोउ ॥ अर्थात्
 यहभीष्मद्रोणादिकयोधा अर्जुननैहीं जयकरेहैं याप्रकारके सर्वलोकोंकेवचनोंका आस्पदहोउ ॥ तहां वामहस्तकरिकैभी शरोंकेचलावणेकास्वभाव
 जिसकाहोवै ताकानाम संव्यसाचिन्है ॥ तात्पर्ययह ॥ ऐसेमहान्पराक्रमवाले तैअर्जुनकूं इनभीष्मद्रोणादिकोंकाजयकरणा कोईअसंभावितनहींहै ॥
 किंतु संभवताहीहै ॥ यातै तुमारेयुद्धरूपव्यापारतैअनंतर मैपरमेश्वर इनभीष्मद्रोणादिकोंकूं रथतैनीचैगेडांगा ॥ तिसकूंदेखिकै सर्वलोक ऐसीकल्पनाकरेंगे ॥
 इसअर्जुननैहीं इनभीष्मद्रोणादिकोंकूंहननकन्याहै इति ॥ ३३ ॥ * ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसदुर्योधनकीसेनावेषेस्थित जोद्रोणाचार्यहै ॥ सोद्रोणा

चार्य कैसा है ॥ सर्वब्राह्मणोंविषे उत्तमब्राह्मण है ॥ तथा धनुर्वेदका आचार्य है ॥ तथा हमसर्वोंका गुरु है ॥ तथा दिव्यअस्त्रकारिकै संपन्न है ॥ और इसदुर्योधनकी सेनाविषे स्थित जो भीष्मपितामह है ॥ सो भीष्मपितामह कैसा है ॥ आपणी इच्छातैं मरणे हारा है ॥ तथा दिव्यअस्त्रकारिकै संपन्न है ॥ जिस भीष्मपितामहकूं परशुराम नैं भीपराजयकन्या नहीं ॥ और इसदुर्योधनकी सेनाविषे स्थित जो जयद्रथ है ॥ सो जयद्रथ कैसा है ॥ जिस जयद्रथका वृद्धक्षत्रनामापिता जो योधा इसहमारे पुत्र काशिर भूमिविषे गड़ैगा तिसयोधाका भीशिर तिसीकालविषे भूमिविषे गड़ैगा याप्रकारका संकल्पकारिकै तपकूं करता भया है ॥ तथा जो जयद्रथ आपभी सर्वदा महादेवके आराधनपरायण है ॥ तथा दिव्यअस्त्रकारिकै संपन्न है ॥ ऐसा जयद्रथराजाभी जीतनेकूं अशक्य है ॥ और इसदुर्योधनकी सेनाविषे स्थित जो कर्ण है ॥ सो कर्ण कैसा है ॥ साक्षात्सूर्यके समान है ॥ तथा सूर्यभगवान्के आराधनकारिकै प्राप्त हुआ है दिव्यअस्त्रजिसकूं ॥ तथा इंद्रनैं दई हुई जाएकपुरुषके नाशकरणे हारी तथा व्यर्थकरणेकूं अशक्य ऐसी शक्ति है ताशक्तिकारिकै युक्त है ॥ इनोतैं आदिलैके दूसरेभी कृपाचार्य अश्वत्थामा भूरिश्रवा इत्यादिके महान्प्रभाववाले योधा हैं ॥ ते सर्वयोधा सर्वप्रकारतैं दुर्जय हैं ॥ ऐसे भीष्मद्रोणादिक महान् योधावोंके विद्यमानहुए मैं अर्जुन इनदुर्योधनादिक शत्रुवोंकूं जीतिकै निष्कंटकराज्यकूं कैसे भोगोंगा ॥ तथा यशकूं कैसे प्राप्त होवोंगा ॥ ऐसी अर्जुनकी शंकाके निवृत्तकरणे वासतै श्रीभगवान् ताशंकाके विषय भूतयोधावोंकूं स्वस्ववाचकनामोंकारिकै कथन करता हुआ कहै है ॥

(मू० श्लो०) द्रोणं च भीष्मं च जयद्रथं च कर्णं च तथान्यान्पियोधवीरान् ॥ मया हतांस्त्वं जहि माव्यथिष्ठा युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान् ॥ ३४ ॥
 द्रोणम् । च । भीष्मम् । च । जयद्रथम् । च । कर्णम् । तथा । अन्यान् । अपि । योधवीरान् । मया । हतान् । त्वम् । जहि ।
 मा । व्यथिष्ठाः । युध्यस्व । जेतोसि । रणे । सपत्नान् ॥ ३४ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हे अर्जुन द्रोणाचार्यकूं तथा भीष्मपितामहकूं तथा जयद्रथकूं तथा कर्णकूं तथा इनोतैं अन्य भी योधावोंकूं जेयोधा मैं परमेश्वरनैं हानन करिराख्ये हैं तिनसर्वयोधावोंकूं तूं अर्जुन हानन कर तूं मैंत व्यथाकूं प्राप्त होउ तथा युद्धकूं कर इससंग्रामविषे शत्रुवोंकूं तूं अवश्य जीतैगो ॥ ३४ ॥ (इति पदार्थः) ॥
 ॥ टीका ॥ हे अर्जुन द्रोणाचार्य तथा भीष्मपितामह तथा जयद्रथ तथा कर्ण तथा इनोतैं भिन्न दूसरेभी जितनैंकी महान् योधा हैं ॥ जे भीष्मादिक सर्वयोधा यहभीष्मादिक कैसे जय होवेंगे याप्रकारकी तुमारी शंकाके विषय भूत हैं ॥ ते भीष्मद्रोणादिक सर्वयोधा कालरूप मैं परमेश्वरनैं तुमारे युद्धतैं पूर्वहीं हनन करिराख्ये हैं ॥ ऐसे भीष्मद्रोणादिक योधावोंकूं तूं अर्जुन अबी हनन कर ॥ पूर्वहननकी येहुए योधावोंके हननकरणेविषे तुमारेकूं कौन परिश्रम होवेंगा ॥ किंतु तिनोके हननकरणेविषे तुमारेकूं कोई भी परिश्रम होवेंगा नहीं ॥ यातैं तूं व्यथाकूं मत प्राप्त होउ ॥ अर्थात् यह भीष्मद्रोणादिक महान् योधा कैसे हननकीये जावेंगे इसप्रकारकी भयनिमित्त कपीडारूप व्यथाकूं

तूं मतप्राप्त होउ ॥ हे अर्जुन तिस भयकूपरित्याग करिकै तूं युद्धकूँकर ॥ इस प्रकार भयकापरित्याग करिकै जबी तूं युद्धकूँकरैगा ॥ तबी इस संग्रामविषे थोडेही का लमै इन दुर्योधनादिक सर्वशत्रुओंकूं जीतैगा ॥ तात्पर्य यह ॥ इस दुर्योधन की सेनाविषे स्थित जितनैकी भीष्मादिक योधा हैं ॥ तिन योधाओंविषे किसी योधातैं आपणे पराजय की शंकाकूं तूं मतकर ॥ तथा किसी भी योधाके हनन करणे जन्य पाप की शंकाकूं तूं मतकर इति ॥ ३४ ॥ तहां दुर्योधन के जय होने की आशा के विषय भूत जे द्रोणाचार्य तथा भीष्मपितामह तथा जयद्रथ तथा कर्ण यह चारियोधा हैं ॥ तिन चारोंके हनन हुएतैं अनंतर निराश्रय हुए दुर्योधन का भी हनन ही होवैगा इस प्रकार का विचार करिकै यह धृतराष्ट्र आपणे जय की आशा कापरित्याग करिकै जबी इन पांडवोंके साथ मित्रभाव करिकै युद्धतैं निवृत्ति होवैगा तबी पांडवोंकी तथा कौरवोंकी दोनोंकी ही शांति होवैगी ॥ इस प्रकारके अभिप्राय वाला संजय तिसतैं अनंतर क्या वृत्तांत होता भया ऐसी धृतराष्ट्र की जिज्ञासा के हुए कहै ॥

(मू० श्लो०) संजय उवाच ॥ एतच्छ्रुत्वा वचनं केशवस्य कृतांजलिर्वेपमानः किरीटी ॥ नमस्कृत्वा भूय एवाह कृष्णं सगद्गदं भीतभीतः प्रणम्य ॥ ३५ ॥ एतत् । श्रुत्वा । वचनं । केशवस्य । कृतांजलिः । वेपमानः । किरीटी । नमस्कृत्वा । भूयः । एव । आह । कृष्णं सगद्गदं । भीतभीतः । प्रणम्य । (इति पदच्छेदः) ॥ हे धृतराष्ट्र श्रीभगवान् के इस पूर्व उक्त वचनकूं श्रवण करिकै जोडे हैं दोनोहस्त जिसनै तथा कंपायमान हुआ तथा अत्यंत भययुक्त हुआ सो अर्जुन श्रीकृष्ण भगवान् कूं नमस्कार करिकै तथा अत्यंत नम्र होइके सगद्गद जैसे होवै तैसे पुनः भी कहता भया ॥ ३५ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे धृतराष्ट्र श्रीभगवान् के इस पूर्व उक्त वचनकूं श्रवण करिकै सो किरीटी अर्जुन अर्थात् इंद्रनै दीया है किरीट जिसकूं ऐसा परमवीर रूप करिकै प्रसिद्ध अर्जुन कंपायमान हुआ अर्थात् परम आश्चर्य के दर्शन जन्य संभ्रम करिकै कंपायमान हुआ सो अर्जुन श्रीकृष्ण भगवान् कूं नमस्कार करिकै सगद्गद जैसे होवै तैसे पुनः भी कहता भया ॥ तहां भय करिकै अथवा हर्ष करिकै निकस्याहू आजो अश्रुजल है ता अश्रुओं करिकै नेत्रोंके पूर्ण हुए तथा कफ करिकै अवरुद्ध हुए कंठ पणे करिकै जेवाणीके मंदपणा तथा स कंपपणा इत्यादिक विकार हैं ताका नाम सगद्गद है ॥ ऐसे सगद्गद करिकै युक्त जैसे होवै तैसे सो अर्जुन भीतभीत हुआ अर्थात् अत्यंत भय करिकै युक्त हुआ पूर्व श्रीकृष्ण भगवान् कूं नमस्कार करिकै पुनः भी प्रणाम करिकै अर्थात् अत्यंत नम्र होइके पुनः भी यह वक्ष्यमाण वचन कहता भया इति ॥ ईहां किसी टीकाविषे (एवाह) इस वचनविषे (एव अह) या प्रकार का पदच्छेद करिकै अह इस पदकूं प्रसिद्धि का वाचक अव्यय पद मान्या है ॥ काहेतैं आह इस प्रकार का पदच्छेद करिकै आह इस पदकूं जो वचन रूप क्रिया का वाचक मानिये ॥ तौ पुनः अर्जुन उवाच यह वक्ष्यमाण वचन पुनरुक्त होवैगा ॥ यातैं (प्रणम्य अर्जुन उवाच) या प्रकारतैं ही पदों का संब

धकरणा (प्रणम्यआह) याप्रकारतैपदोंकासंबंधकरणानहीं इति ॥ ३५ ॥ * ॥ अबएकादशश्लोकोंकरिकैअर्जुन श्रीभगवान्केप्रति सोवचनकहेहै ॥
 (मू०श्लो०) अर्जुनउवाच ॥ स्थानेहृषीकेशतवप्रकीर्त्याजगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यतेच ॥ रक्षांसिभीतानिदिशोद्रवंतिसर्वेनमस्यन्तिच
 सिद्धसंवाः ॥ ३६ ॥ स्थाने । हृषीकेश । तव । प्रकीर्त्या । जगत् । प्रहृष्यति । अनुरज्यते । च । रक्षांसि । भीतानि । दिशः ।
 द्रवंति । सर्वे । नमस्यन्ति । च । सिद्धसंवाः ॥ ३६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेहृषीकेश तुमारी प्रकीर्तिकरिकै यहसर्वजगत् हर्षकंप्रा
 तहोवैहै तथा अनुरागकंप्राप्तहोवैहै तथाराक्षस भयकंप्राप्तहुए सर्वदिशावांविषे भागेजावैहै तथा सर्व सिद्धोंकेसमूह नमस्कारकरहैं
 यहसर्व वार्ता युक्तहीहै ॥ ३६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेहृषीकेश अर्थात् हेसर्वइंद्रियोंकेप्रवर्तक जिसकारणतै तूंपरमेश्वर अत्यंतअद्भुतप्रभाववालाहैं तथाभक्तवत्सलहैं ॥ तिसकारणतै तुमारीप्रकीर्तिक
 रिकै अर्थात् तुमारीनिरतिशयउत्कृष्टताकेकीर्त्तनकरिकै तथाश्रवणकरिकै केवल मैंअर्जुनही अत्यंतहर्षकूनहींप्राप्तहोता ॥ किंतु राक्षसोंकाविरोधी जितनाकी
 चेतनमात्ररूपजगत्है ॥ सोसर्वजगत्भी तिसआपकीप्रकीर्तिकरिकै महान्हर्षकंप्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्त्ताभी युक्तहीहैं ॥ तथा तिसतुमारीप्रकीर्तिकरिकै यहसर्वज
 गत् तैपरमेश्वरविषयक अनुरागकूं जोप्राप्तहोवैहै ॥ सोभी युक्तहीहै ॥ तथा तिसतुमारीप्रकीर्तिकरिकै सर्वराक्षस भयकंप्राप्तहुए जो सर्वदिशावांविषे भागेभागेजा
 वैहैं ॥ सोभी युक्तहीहै ॥ तथा सर्व कपिलादिक सिद्धोंकेसमूह तैपरमेश्वरकेताई जोश्रद्धाभक्तिपूर्वक नमस्कारकरहैं ॥ सोभी युक्तहीहै इति ॥ और किसी
 टीकाविषेतौ (स्थानेहृषीकेश) इसश्लोकका यहअर्थ कथनकन्याहै ॥ हेहृषीकेश (कालोस्मिलोकक्षयकृत्प्रवृद्धोलोकान्समाहर्तुमिहप्रवृत्तः) अर्थयह ॥ भूमि
 विषेभाररूपजेदुष्टजनहैं तिनसर्वदुष्टलोकोंकेसंहारकरणेवास्तै मैंकालरूपपरमेश्वर प्रवृत्तहुआहूं ॥ यहवचन आपनै पूर्वकथनकन्याथा ॥ तिस आपके प्रकृष्टवचनरूप
 प्रकीर्तिकूंश्रवणकरिकै यहसाधुलोकरूपजगत् जो परमसंतोषकूं प्राप्तहोवैहै ॥ सोभी युक्तहीहै ॥ अर्थात् साधुलोकोंकेरक्षणकरणेवास्तै परमेश्वरनै सर्वदुष्टजनोंके
 संहारकियाहुए तिनसाधुलोकोंकूं परमसंतोषकीप्राप्तिहोणी युक्तहीहै तथा तैपरमेश्वरके तिसप्रकृष्टवचनकूंश्रवणकरिकै तेसाधुलोक तैभक्तवत्सल तथासर्वभूतोंकेसुह
 दरूप परमात्मादेवविषे जो अनुरागकूंकरहैं ॥ सोभीयुक्तहीहै ॥ अर्थात् सर्वलोकोंकेउपद्रवकूंनिवृत्तकरणेवास्तैउद्यमवाले तथापरमकृपालुरूप ऐसेतैपरमेश्वरविषे
 तिनसाधुलोकोंका अनुरागहोणा युक्तहीहै ॥ तथा तैपरमेश्वरके तिसप्रकृष्टवचनकेश्रवणकरिकै सर्वराक्षस भयकंप्राप्तहुए जो पूर्वादिकदिशावांकेकोणोंविषे भागेभागे
 जावैहैं ॥ सोभीयुक्तहीहै ॥ तथा तैपरमेश्वरके तिसप्रकृष्टवचनकेश्रवणकरिकै सर्वलोकोंकेसुखकीइच्छाकरणेहारे सर्वसिद्धोंकेसमूह तैपरमेश्वरकेताई जोनमस्कारकरहैं

सोभी युक्तहीहैं ॥ ईहां सिद्ध यहशब्द देवजातिमात्रकाउपलक्षणहै ॥ अर्थात् देव कापे सिद्ध गंधर्व चारण इत्यादिकसर्वदेवत्वजातिवालेपुरुष हेस्वामिन् जोतु मनें दुष्टजनोंकेसंहारकरणेकीप्रतिज्ञाकरीहै साप्रतिज्ञा अवश्यकरिकै पूर्णकरणी याप्रकारकीप्रार्थनापूर्वक तैपरमेश्वरकेताई जोप्रमाणकरेहैं ॥ सोभी युक्तहीहै इति ॥ तहां (स्थानेहृषीकेश) यहश्लोक रक्षोघ्ननामामंत्ररूपकरिकै मंत्रशास्त्रविषेप्रसिद्धहै ॥ जिसमंत्रकेअनुष्ठानकरिकै दुष्टराक्षसोंकाहननहोवै ता मंत्रकानाम रक्षोघ्नमंत्रहै इति ॥ ३६ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे अर्जुननें श्रीभगवान्‌विषे सर्वलोकोंके हर्षकीविषयता तथाअनुरागकीविषयता तथानम स्कार्यता कथनकरी ॥ अब तिसीअर्थकीसिद्धिकरणेविषे अर्जुन हेतुकहेहै ॥

(मू० श्लो०) कस्माच्च तेन न मे रन्महात्मन् गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे ॥ अनंतदेवेश जगन्निवास त्वमक्षरं सदसत्तत्परं यत् ॥ ३७ ॥
कस्मात् । चै । ते । न । न मे रन् । महात्मन् । गरीयसे । ब्रह्मणः । अपि । आदिकर्त्रे । अनंत । देवेश । जगन्निवास । त्वम् । अक्षरं । सत् । असत् । तत्परं । यत् ॥ ३७ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हेमहात्मन् हेअनंत हेदेवेश हेजगन्निवास ब्रह्माके भी गुरुरूप तथाजनक रूप ऐसेआपकेताई तेसर्वदेवता किसंवासते नहीं नमस्कारकरेंगे किंतुकैरेंगेही हेभगवन् तू हीं सत्‌रूपहैं तथाअसत्‌रूपहैं तथाति नंदोनोंतैपरे जो अक्षरब्रह्महै सोभीतूहैं ॥ ३७ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेमहात्मन् अर्थात् हेपरमउदारचित्तवाला ॥ तथा हेअनंत अर्थात् हेदेशकालवस्तुपरिच्छेदतैरहित ॥ तथा हेदेवेश अर्थात् हेहिरण्यगर्भादिकसर्व देवताओंकेनियंता ॥ तथा हेजगन्निवास अर्थात् हेसर्वजगत्काआश्रयरूप ॥ तुमारेताई तेसर्वसिद्धोंकेसमूह तथासर्वदेवता किसंवासते नहींनमस्कारकरेंगे ॥ किंतु आपकेताई तिनसर्वोंकानमस्कारकरणा उचितहीहै ॥ कैसेहोआप ॥ सर्वजगत्कागुरुरूपजोब्रह्माहै तिसब्रह्माकेभी अत्यंतगुरुरूपहो ॥ तथा इससर्वजगत्काजनक जोब्रह्माहै तिसब्रह्माकेभी जनकहो ॥ ऐसेआपकेताई तिनसर्वसिद्धादिकोंकानमस्कार उचितहीहै ॥ ईहां (कस्माच्च) इसवचनकेअंतविषेस्थितजोचकारहै ॥ ताचकारकरिकै अर्जुननें यहअर्थ सूचनकया ॥ ब्रह्मादिकदेवताओंकाभी नियंतापणा तथाउपदेष्टापणा इत्यादिकहेतुओंविषे एकएकभीहेतु आपपरमेश्वरविषे तिन सर्वसिद्धोंकीनमस्कार्यताका प्रयोजकहै ॥ जबी एकएकभीहेतु आपविषे तानमस्कार्यताका प्रयोजकहुआ ॥ तबी महात्मापणा तथाअनंतपणा तथाजगन्निवास पणा इत्यादिकअनेकशुभगुणोंकरिकैयुक्तहुआ सोहेतु आपविषे तानमस्कार्यताकाप्रयोजकहै याकेविषेक्याआश्चर्यहै इति ॥ पुनःकैसेहोआप सत्‌रूपहो तथा असत्‌रूपहो ॥ तहां अस्ति इसप्रकारकीविधिमुखप्रतीतिकरिकै जोवस्तु प्रतीतहोवैहै तावस्तुकानाम सत्‌है ॥ और नास्तिइसप्रकारकीनिषेधमुखप्रतीतिकरिकै

जो वस्तु प्रतीत होवै है ता वस्तु कानाम असत् है ॥ अथवा व्यक्त कानाम सत् है ॥ और अव्यक्त कानाम असत् है ॥ सो सत् असत् रूप भी आप ही हो ॥ तथा तिस सत् असत् तै भी सूक्ष्म जो सर्व कामूल कारण रूप अक्षर ब्रह्म है सो अक्षर ब्रह्म भी आप ही हो ॥ तै परमेश्वर तै भिन्न कोई भी वस्तु न ही है ॥ तहां श्रुति ॥ (सर्व ह्येतद्ब्रह्म) ॥ अर्थ यह ॥ यह सर्व जगत् ब्रह्म रूप ही है इति ॥ हे भगवन् इस पूर्व उक्त सर्व हेतुओं करिके ते सिद्धादिक सर्व लोक तै परमेश्वर के ताई नमस्कार करे हैं तथा अत्यंत हर्ष कूं तथा अनुराग कूं करे है इस विषे कोई आश्चर्य न ही है इति ॥ ३७ ॥ ❀ ॥ अब अत्यंत भक्तिके वेग तै सो अर्जुन पुनः भी श्री कृष्ण भगवान् की स्तुति करे है ॥

(मू० श्लो०) त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् ॥ वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम त्वया तत् तं विश्वमनंतरूप ॥ ३८ ॥ त्वम् । आदिदेवः । पुरुषः । पुराणः । त्वम् । अस्य । विश्वस्य । परम् । निधानम् । वेत्ता । अस्मि । वेद्यम् । च । परम् । च । धाम । त्वया । तत्तम् । विश्वम् । अनंतरूप ॥ ३८ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हे अनंतरूप तूं परमेश्वर ही आदिदेव हैं तथा पुरुष हैं तथा पुराण हैं तथा तूं ही इस विश्व का परम निधान हैं तथा सर्व के जानने हारा हैं^{१२} तथा सर्व दृश्य रूप हैं तथा परम धाम रूप हैं तथा तूं मैं नहीं यह सर्व विश्व व्याप्त कन्या है ॥ ३८ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे अनंतरूप अर्थात् हे देश काल वस्तु परिच्छेद तै रहित स्वरूप ॥ इस सर्व जगत् के उत्पत्ति का हेतु होने तै तुम ही आदिदेव हो ॥ तथा सर्वत्र अस्ति भाति प्रिय रूप करिके पूर्ण होने तै तुम ही पुरुष हो ॥ अथवा सर्व शरीर रूप पुरियों विषे शयन कर्त्ता होने तै तुम ही पुरुष हो ॥ तथा तुम ही पुराण हो ॥ अर्थात् अनादि हो ॥ अथवा इस शरीर के नाश हु भी आप नाश होते नहीं यातै पुराण हो ॥ तथा तुम ही इस सर्व विश्व का परम निदान हो ॥ अर्थात् इस सर्व विश्व के लय का स्थान रूप हो ॥ ईहां (आदिदेवः परं निधानम्) इन दोनों पदों करिके अर्जुन नै श्री भगवान् विषे सर्व जगत् के उत्पत्ति का हेतु पणा तथा लय का स्थान पणा कथन कन्या ॥ ता करिके परमेश्वर विषे सर्व जगत् का उपादान कारण पणा कथन कन्या ॥ काहे तै जिस तै कार्य उत्पन्न होवै है तथा जिस विषे कार्य लय होवै है ॥ सो उपादान कारण ही होवै है ॥ जैसे घटरूप कार्य मृत्तिका तै ही उत्पन्न होवै है ॥ तथा मृत्तिका विषे ही लय होवै है ॥ यातै सामृत्तिका ता घट का उपादान कारण ही होवै है ॥ इस प्रकार तै परमेश्वर विषे सर्व जगत् का उपादान कारण पणा कहिके अब सर्वज्ञ तारूप हेतु करिके सांख्य शास्त्र कल्पित जड प्रधान रूप कारण की व्यावृत्ति करता हुआ अर्जुन तिस परमेश्वर विषे जगत् का निमित्त कारण पणा भी कथन करे है (वेत्तासि इति) हे भगवन् सर्वज्ञ होने तै आप ही इस सर्व जगत् के जानने हारे हो ॥ अर्थात् आप ही इस सर्व जगत् का कर्त्तारूप निमित्त कारण हो ॥ तहां इस सर्व जगत् कूं जो परमेश्वर तै भिन्न अंगीकार करिये तौ द्वैत भाव की प्राप्ति होवैगी ॥ ता द्वैत भाव की निवृत्ति करने वास तै अर्जुन कहे है (वेद्यमिति)

हेभगवन् जितनाकीयहृदयप्रपंचहै सोभीतूँहींहैं ॥ अर्थात् ज्ञानस्वरूप तैपरमेश्वरविषे इसजडरूपदृश्यप्रपंचका कोईभीवास्तवसंबंधहैनहीं ॥ यातैं यहसर्वदृश्यप्रपंच तैपरमेश्वरविषे कल्पितहीहै ॥ और कल्पितवस्तु अधिष्ठानतैपृथक्होवैनहीं ॥ जैसे कल्पितसर्पादिक रज्जुरूपअधिष्ठानतैं पृथक्होवैनहीं ॥ यातैं द्वैतभावकीप्राप्ति होवैनहीं इति ॥ इसीकारणतैंहीं आप परमधामहो ॥ अर्थात् सत्चित्तानंदधन तथाकार्यसहितअविद्यातैरहित जोव्यापकविष्णुका परमपदहै सोपरमपदभी आपहीहो ॥ हेभगवन् स्वतःसत्तास्फूर्तितैरहितजोयहसर्वविश्वहै ॥ सोयहसर्वविश्व स्थितिकालविषे मायिकसंबंधकरिकै तैंसत्तास्फुरणरूपकारणनैहीं व्याप्तकन्याहै ॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठाननै आपणेइदमूरूपकरिकै कल्पितसर्वदंडादिक व्याप्तकन्येहैं ॥ तैसे तैपरमेश्वरनैहीं आपणेअस्तिभातिप्रियरूपकरिकै यहसर्वजगत्व्याप्त कन्याहै इति ॥ ३८ ॥ * ॥ अब अर्जुन श्रीभगवान्की सर्वदेवतारूपकरिकै स्तुतिकरेहै ॥

(मू० श्लो०) वायुर्यमोग्निर्वरुणःशशांकःप्रजापतिस्त्वंप्रपितामहश्च ॥ नमोनमस्तेस्तुसहस्रकृत्वःपुनश्चभूयोपिनमोनमस्ते ॥ ३९ ॥
वायुः । यमः । अग्निः । वरुणः । शशांकः । प्रजापतिः । त्वं । प्रपितामहः । च । नमः । नमः । ते । अस्तु । सहस्रकृत्वः । पुनः ।
च । भूयः । अपि । नमः । नमः । ते ॥ ३९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् वायुं यमं अग्निं वरुणं चंद्रमां प्रजापतिं तथा प्रपि
तामहं इत्यादिकसर्वदेवतारूप तूंपरमेश्वरहीहै यातैं तैपरमेश्वरकेताई हमारा अनेकसहस्रवार नमस्कार नमस्कार होवउ तथा
तुमारेताई पुनः भी वारंवार नमस्कार नमस्कार होवउ ॥ ३९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् तूंपरमेश्वरही वायुरूपहैं ॥ तथा तूंपरमेश्वरही यमरूपहैं ॥ तथा तूंपरमेश्वरही अग्निरूपहैं ॥ तथा तूंपरमेश्वरही वरुणरूपहैं ॥ तथा तूंपर
मेश्वरही चंद्रमारूपहैं ॥ ईहां (शशांकः) यहशब्द सूर्यादिकदेवताओंकाभी उपलक्षकहै ॥ अर्थात् तूंपरमेश्वरही सूर्यादिकसर्वदेवतारूपहैं ॥ तथा तूंपरमेश्वरही
प्रजापतिरूपहैं ॥ ईहां (प्रजापतिः) इसशब्दकरिकै विराट्काग्रहणकरणा अथवा हिरण्यगर्भकाग्रहणकरणा अथवा दक्षादिकोंकाग्रहणकरणा ॥ तथा तूंपरमे
श्वरही प्रपितामहरूपहैं ॥ अर्थात् तिसहिरण्यगर्भकाभी पितारूपजोकारणब्रह्महै सोभीतूंपरमेश्वरहीहैं ॥ हेभगवन् जिसकारणतैं सर्वदेवतारूपहोणेतैं तूंपरमेश्वर
सर्वप्राणीयोंकरिकै नमस्कारकरणेयोग्यहै ॥ तिसकारणतैं मैंअत्यंतअनाथअर्जुनकाभी तुमारेताई अनेकसहस्रवार नमस्कारहोवउ नमस्कारहोवउ ॥ तथा
पुनःभी आपकेताई वारंवार नमस्कारहोवउ नमस्कारहोवउ ॥ ईहां पुनःपुनः नमस्कारोंकीआवृत्तिकरिकै अर्जुननै भक्तिश्रद्धापूर्वक भगवत्केनमस्कारोंविषे अलं
बुद्धिकाअभाव सूचनकन्या ॥ अर्थात् तैपरमेश्वरकेताई श्रद्धाभक्तिपूर्वक पुनःपुनःनमस्कारोंकेकरणेतैं मैंअर्जुनकीतृप्तिहोतीनहीं इति ॥ ३९ ॥ * ॥ किंच ॥

(मू० श्लो) नमःपुरस्तादथपृष्ठतस्तेनमोस्तुतेसर्वतएवसर्व ॥ अनंतवीर्यामितविक्रमस्त्वंसर्वसमाप्नोषिततोसिसर्वः ॥४०॥ नमः ।
 पुरस्तात् । अथ । पृष्ठतः । ते । नमः । अस्तु । ते । सर्वतः । एव । सर्व । अनंतवीर्यामितविक्रमः । त्वं । सर्वम् । समाप्नोषि ।
 ततः । असि । सर्वः ॥ ४० ॥ (इतिपदार्थः) ॥ हेसर्व तुमारेताई अग्रभागविषे हमारा नमस्कार होवउ तथा पृष्ठविषेभी नम
 स्कार होवउ तथा तुमारेताई सर्वदिशावोंविषेहीं नमस्कारहोवउ तूं परमेश्वर अनंतवीर्यामितविक्रमवालाहैं तथातूं इससर्वजगत्कूं
 व्याप्तकरेहैं तिसकारणतैं तूं परमेश्वर सर्व कैंह्याजावैहैं ॥ ४० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेसर्व अर्थात् हेसर्वात्मारूपभगवन् मैं अर्जुनका तैंपरमेश्वरकेताई अग्रभागविषेभी नमस्कारहोवौ ॥ तथा मैंअर्जुनका तैंपरमेश्वरकेताई
 पृष्ठभागविषेभीनमस्कारहोवौ ॥ तथा मैंअर्जुनका तैंपरमेश्वरकेताई सर्वदिशावोंविषे नमस्कारहोवौ ॥ ईहां यद्यपि सर्वात्मारूपव्यापकपरमेश्वरके
 अग्रभागपृष्ठभागादिक संभवतेनहीं ॥ परिच्छिन्नपदार्थकेहीं तेअग्रभागादिकहोवैहैं ॥ तथापि अर्जुननैं तिससर्वात्मारूप परमेश्वरके तेअग्रभागादिककल्पनाकरिकै
 कथन करेहैं ॥ वास्तवतैं तासर्वात्मारूपपरमेश्वरके तेअग्रभागादिकहैनहीं इति ॥ और किसीटीकाविषेतों (पुरस्तात्) इसपदका कर्मोंकेआदिविषे यहअर्थ
 कन्याहै ॥ और (पृष्ठतः) इसपदका तिनकर्मोंकीसमाप्तिविषे यहअर्थकन्याहै ॥ और (सर्वतः) इसपदका तिनकर्मोंकेमध्यविषे यहअर्थकन्याहै ॥ अर्थात्
 कर्मोंकेआदिविषेभीतैं परमेश्वरके ताई हमारानमस्कारहोवौ ॥ तथा तिनकर्मोंकीसमाप्तिविषेभी तैंपरमेश्वरकेताई हमारा नमस्कारहोवौ ॥ तथा तिनकर्मोंके
 मध्यविषेभी तैंपरमेश्वरकेताई हमारा नमस्कारहोवौ ॥ इसव्याख्यानविषे तिस सर्वात्मारूपपरमेश्वरके अग्रभागादिक कल्पनाकन्येजावैनहीं इति ॥ हेभगवन्
 आपकैसेहो ॥ अनंतवीर्यामितविक्रमहो ॥ तहां अनंतहै वीर्यजिसका तथाअमितहैविक्रमजिसका ताकानाम अनंतवीर्यामितविक्रमहै ॥ तहांशरीरकेबलका
 नाम वीर्यहै ॥ और शिक्षाशस्त्रोंके प्रयोगकीजाकुशलताहै ताकानाम विक्रमहै ॥ तहांएकवीर्यकारिकैहींअधिकता तथाएकविक्रमकरिकैहींअधिकता तों भी दु
 र्योधनादिकोंविषे तथाअन्यराजावोंविषेभी विद्यमानहै ॥ परंतु अनंतवीर्यकरिकैअधिकता तथा अमितविक्रमकरिकैअधिकता आपपरमेश्वरतैंविना दूसरेकिसीवि
 षेहैनहीं ॥ किंतु एकआपविषेहींहै ॥ अथवा (अनंतवीर्य अमितविक्रमः) यहदोपदजानणे तहां अनंतवीर्य यहपदतों हेअनंतवीर्य याप्रकारतैं श्रीभगवान्का
 संबोधनहै इति ॥ तहां अर्जुननैं श्रीभगवान्का (हेसर्व) यहसंबोधन कथनकन्याथा ॥ तासर्वशब्दकेअर्थकूं अब अर्जुन कथनकरेहै (सर्वसमाप्नोषिततोसिसर्वः
 इति) हेभगवन् जिसकारणतैं तूं परमेश्वर इससर्वजगत्कूं आपणे सत्ता स्फुरणरूपकरिकै व्याप्तकरि रह्याहैं ॥ तिसकारणतैं तूं परमेश्वर सर्व इसनामकरिकै

कहा जावेहैं ॥ अर्थात् तैपरमेश्वरतैं अतिरिक्त कोई भी वस्तु नहीं है इति ॥ ४० ॥ * ॥ हे भगवन् जिस कारणतैं मैं अर्जुन तैपरमेश्वरके माहात्म्यके अज्ञानतैं तुमारे अनेक अपराधोंकूं करता भयाहूं तिसकारणतैं परमकृपालुरूप तैपरमेश्वरकूं दंडवत्प्रणाम करिकैं मैं अर्जुन तिन आपणे अपराधोंकी क्षमा करताहूं ॥ इस अर्थकूं अब अर्जुन दोश्लोकोंकरिकैं कहैहैं ॥

(मू० श्लो०) सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ॥ अजानता महिमानं तवेदं मया प्रमादात् प्रणयेन वापि ॥ ४१ ॥
सखा । इति । मत्वा । प्रसभं । यत् । उक्तं । हे कृष्ण । हे यादव । हे सखा । इति । अजानता । महिमानं । तव । इदं । मया ।
प्रमादात् । प्रणयेन । वां । अपि ॥ ४१ ॥ (इति पदच्छेदः) हे भगवन् तुमारे इस विश्वरूपकूं तथा ऐश्वर्यरूपकूं न जानने हारे मैं अर्जुन नैं यह कृष्ण हमारा सखा है इस प्रकार मानिकैं चित्तके विक्षेपतैं अथवा स्नेहकरिकैं भी जे हे कृष्ण हे यादव हे सखा इस प्रकारके अभिर्भव पूर्वक वचन कहैहैं ते सर्व आप क्षमा करौ ॥ ४१ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे भगवन् यह कृष्ण भगवान् हमारा सखा है अर्थात् समान वयवाला है अथवा हमारे मामेका पुत्र है ॥ इस प्रकारका तुमारेकूं मानिकैं हमनैं आपणे चित्तके विक्षेपरूप प्रमादतैं अथवा स्नेहकरिकैं आपके प्रति जे प्रसन्न वचन कथन करैहैं ॥ अर्थात् आपणी उत्कृष्टता का स्थापन रूप अभिभव करिकैं जे अनुचित वचन कथन करैहैं ॥ ते सर्व हमारे अपराध आप क्षमा करौ ॥ शंका ॥ हे अर्जुन ऐसे अनुचित वचन तुमनैं किस हेतुतैं कथन करैहैं ॥ ऐसी भगवान् की शंका के हुए ॥ अर्जुन तिन अनुचित वचनोंके कहणे विषे हेतुकूं कथन करैहैं ॥ (अजानता महिमानं तवेदमिति) हे भगवन् जिस कारणतैं तुमारे इस विश्वरूपकूं तथा तुमारे ऐश्वर्यरूपमहिमाकूं मैं अर्जुन पूर्व जानता नहीं था ॥ इस कारणतैं मैं अर्जुन आपके प्रति ते अनुचित वचन कहता भयाहूं ॥ शंका ॥ हे अर्जुन तुमनैं हमारेकूं ऐसे कौन अनुचित वचन कहैहैं ऐसी श्री भगवान् की शंका के हुए अर्जुन तिन अनुचित वचनोंका स्वरूप कथन करैहैं (हे कृष्ण हे यादव हे सखा इति) हे भगवन् सर्व जगत् की उत्पत्ति स्थिति लयकरणे हारे तथा ब्रह्मादिक सर्व देवताओंके भी गुरु रूप ऐसे आप परमेश्वरकूं मैं अर्जुन हे कृष्ण हे यादव हे सखा इस प्रकारके संबोधनोंकरिकैं बुलावता भयाहूं इति ॥ तहां किसी मूल पुस्तक विषे (महिमानं तवेदं) या प्रकारका भिषाठ होवैहै ॥ इस प्रकारके पाठ विषेतैं (महिमानम् इमम्) इन दोनों पदोंका सामानाधिकरण्य ही जानणा ॥ अर्थात् तुमारे इस विश्वरूपमहिमाकूं मैं अर्जुन पूर्व जानता नहीं था इति ॥ ४१ ॥ * ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) यच्चावहासार्थमसत्कृतोसिविहारशय्यासनभोजनेषु ॥ एकोऽथवाप्यच्युततत्समक्षंतक्षामयेत्वामहमप्रमेयम् ॥ ४२ ॥

यत् । च । अवहासार्थम् । असत्कृतः । असि । विहारशय्यासनभोजनेषु । एकः । अथवा । अपि । अच्युत । तत्समं । तत् । क्षामये । त्वाम् । अहम् । अप्रमेयम् ॥ ४२ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअच्युत तथा परिहासकेवासते विहारशय्याआसनभोजनविषे एकलास्थितहुआ अथवा कंदाचित् तिनसखावोंकेसन्मुखस्थितहुआ तूं परमेश्वर मेंअर्जुननें जो पराभवकन्याहैं सोसर्वअपराध मेंअर्जुन तैं अप्रमेयकेप्रति क्षमाकरावताहूं ॥ ४२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअच्युत अर्थात् हेसर्वदानिर्विकार ॥ क्रीडारूपजोविहारहै तिसविहारविषे ॥ तथा वस्त्रतूलिकादिकोंकरिकैरचीहुईजा शयनकरणेकास्थानरूप शय्याहै तिसशय्याविषे ॥ तथा सिंहासनादिरूप जोआसनहै ताआसनविषे ॥ तथा सजातीयबहुतपुरुषोंकीपंक्तिविषे अन्नकाभक्षणरूपजोभोजनहै ताभोजनविषे ॥ सर्वसखावोंकूंछोडिकैएकलेस्थितहुएआपका अथवा परिहासकरतेहुए तिनसखावोंकेसमीपस्थितहुए आपका मेंअर्जुननें उपहासकेवासते जोपराभवकन्याहैं ॥ तेअनुचितवचनरूप सर्वअपराध अथवा असत्करणरूप सर्वअपराध मेंअर्जुन तुमारेतैं क्षमाकरावताहूं ॥ कैसेहोआपअप्रमेयहो ॥ अर्थात् अचिंत्यप्रभाववालेहो ॥ तात्पर्ययह ॥ अचिंत्यप्रभाववाला तथा सर्वविकारोंतैं रहित तथापरमरूपालुरूप ऐसेआपपरमेश्वरनें तुमारेप्रभावकूंनजानणेहारेमेंअर्जुनके तेसर्वअपराध क्षमाकरणे इति ॥ ४२ ॥ ❀ ॥ अब अर्जुन श्रीभगवान्केप्रति सापूर्वउक्त अचिंत्यप्रभावता स्पष्टकरिकैवर्णनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) पितासिलोकस्यचराचरस्यत्वमस्यपूज्यश्चगुरुर्गरीयान् ॥ नत्वत्समोस्त्यभ्यधिकःकुतोऽन्योलोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव ॥ ४३ ॥ पिता । असि । लोकस्य । चराचरस्य । त्वम् । अस्य । पूज्यः । च । गुरुः । गरीयान् । न । त्वत्समः । अस्ति । अभ्यधिकः । कुतः । अन्यः । लोकत्रये । अपि । अप्रतिमप्रभाव ॥ ४३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेउपमातैंरहितप्रभाववाला इस चराचररूप सर्वलोकका तूं पितारूपहैं तथा पूज्यहैं तथागुरुरूपहैं तथा गुरुतरहैं तीनलोकविषे तुमारेसमान भी कोईअन्य नहीं हैं तों तुमारेतैं अधिक कहांतैंहोवै ॥ ४३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् इसस्थावरजंगमरूपसर्वजगत्मात्रका तूं पिताहै अर्थात् जनकहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (यतोवाइमानिभूतानिजायंते ॥ अर्थयह ॥ जिसपरमात्मादेवतैं यहसर्वभूतप्राणी उत्पन्नहोवैहैं ॥ इत्यादिकश्रुतियां तैंपरमेश्वरकूं सर्वजगत्काजनककहेहैं ॥ तथा सर्वकाईश्वरहोणेतैं आपही पूज्यहो ॥ तथा आपहीं सर्वशास्त्रकेउपदेशकरणेहारे गुरुरूपहो ॥ इसी कारणतैंहीं सर्वप्रकारकरिकै आप गुरुतरहो ॥ अर्थात् सर्वतैंउत्कृष्टहो ॥ इसीकारणतैंही हेभगवन्तीनलोकोंविषे तैंपरमेश्वरकेसमानभी

दूसरा कोई है नहीं ॥ तौं तिनतीनलोकोविषे तैपरमेश्वरतैं अधिक दूसरा कोई कहाँ तैं होवैगा ॥ किंतु कोई भी अधिक नहीं है ॥ तात्पर्य यह ॥ तैपरमेश्वरके समान दूसरा कोई है नहीं ॥ काहेतैं जो कदाचित् तैपरमेश्वरके समान दूसरा कोई अंगीकार करिये ॥ तौं सो दूसरा भी ईश्वर ही सिद्ध होवैगा ॥ तहां एक ईश्वर तौं इस जगत् के उत्पन्न करने की इच्छा करैगा ॥ और दूसरा ईश्वर तिसी काल विषे इस जगत् के संहार करने की इच्छा करैगा ॥ यातैं कोई भी व्यवहार सिद्ध नहीं होवैगा ॥ किंतु सर्व व्यवहारों का लोप होवैगा ॥ यातैं तैपरमेश्वरके समान दूसरा कोई है नहीं ॥ जबी तीनलोकोविषे तैपरमेश्वरके समान भी कोई नहीं भया ॥ तबी तुमारेतैं अधिक कौन होवैगा ॥ किंतु सर्व प्रकार करिकै तुमारेतैं अधिक कोई है नहा ॥ तहां श्रुति ॥ (न त्वत्समश्चात्त्यधिकश्च दृश्यते) ॥ अर्थ यह ॥ तिसपरमेश्वरके समान भी कोई देखने विषे आवतान ही ॥ तथा तिसपरमेश्वरतैं अधिक भी कोई देखने विषे आवतान ही इति ॥ तहां तैपरमेश्वरके समान पुरुष का ही असंभव है इस पूर्व उक्त अर्थ विषे अर्जुन हेतु कहै है (हे अ प्रतिम प्रभाव इति) ईहां सादृश्य का नाम प्रतिमा है ॥ सा सादृश्य रूप प्रतिमा नहीं है विद्यमान जिस कूं ताका नाम अप्रतिम है ॥ ऐसा अप्रतिम है प्रभाव क्या सामर्थ्य जिसका ताका नाम अप्रतिम प्रभाव है इति ॥ ४३ ॥ ❀ ॥ जिस कारणतैं आप ऐसे हो ॥ तिस कारणतैं मैं अर्जुन आपने अपराधों कूं क्षमा करावने वासतैं आपके आगे दंडवत् प्रणाम करिकै प्रार्थना करता हूं ॥ इस अर्थ कूं अब अर्जुन कहै है ॥

(मू० श्लो०) तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम् ॥ पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः प्रियः प्रियायार्हसि देवसोऽहम् ॥ ४४ ॥ तस्मात् । प्रणम्य । प्रणिधाय । कायं । प्रसादये । त्वाम् । अहम् । ईशम् । ईड्यम् । पित्ता । ईव । पुत्रस्य । सखा । ईव । सख्युः । प्रियः । प्रियायाः । अर्हसि । देवं । सोऽहम् ॥ ४४ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हे भगवन् तिस कारणतैं तैपरमेश्वर कूं नमस्कार करिकै तथा आपने देह कूं भूमि विषे दंड की न्याई धारण करिकै मैं अर्जुन सर्वों करिकै स्तुतिकरणे योग्य तैं ईश्वर कूं प्रसन्न होवो ऐसी प्रार्थना करूं हूं इस कारणतैं हे देव पुत्र के अपराध कूं पित्ता की न्याई तथा सखा के अपराध कूं सखा की न्याई तथा प्रिया के अपराध कूं पितिकी न्याई हमारे अपराध कूं आप क्षमा करने कूं योग्य हो ॥ ४४ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे भगवन् जिस कारणतैं तैपरमेश्वर इस सर्वलोक का पितारूप हैं ॥ तथा सर्वका गुरुरूप हैं ॥ तिस कारणतैं मैं अर्जुन तैपरमेश्वर कूं नमस्कार करिकै तथा आपनी काया कूं अत्यंत नीचै धारण करिकै अर्थात् दंड की न्याई भूमि विषे पतन होइकै तैपरमेश्वरके प्रसन्नता की प्रार्थना करता हूं ॥ अर्थात् मैं अपराधी अर्जुन तिन आपने अपराधों की क्षमा करावने वासतैं मैं अर्जुन ऊपर आप प्रसन्न होवो या प्रकार की प्रार्थना आपके आगे करता हूं ॥ कैसे हो आप ईश हो ॥ अर्थात् इस सर्वजगत् के

नियंताहो ॥ पुनः कैसे हो आप ईड्यहो ॥ अर्थात् ब्रह्मादिकदेवताओंकरिकैभी स्तुतिकरणयोग्यहो ॥ इसकारणतैं हेदेव अर्थात् हेस्वप्रकाशरूप ॥ जैसे पुत्रके अपराधकूं पिता क्षमाकरेहै ॥ तथा जैसे सखाकेअपराधकूं सखा क्षमाकरेहै ॥ तथा जैसे पतिव्रताप्रियाकेअपराधकूं पति क्षमाकरेहै ॥ तैसे मैंअर्जुनकेअपराध कूंभी आपपरमेश्वर क्षमाकरणेकूंयोग्यहो ॥ जिसकारणतैं मैंअर्जुन केवल तुमारेहीशरणहूं ॥ अन्यकिसीकेशरणहूंनहीं ॥ तिसकारणतैं आप हमारेअपराधकूं क्षमाकरणेयोग्यहो इति ॥ ईहां (प्रियायार्हसि) इसवचनविषे वत् इसशब्दकालोप तथा विसर्गकेलोपहुएभीसंधि यहदोनों छांदसहैं इति ॥ ४४ ॥ * ॥ इसप्रकार अर्जुन श्रीभगवान्केप्रति आपणेअपराधकेक्षमाकीप्रार्थनाकरिकै पुनः श्रीभगवान्केप्रति तिसविश्वरूपकेउपसंहारपूर्वक पूर्वलेखकेदर्शनकीप्रार्थना दोश्लोकोंकरिकै करेहै ॥

(मू० श्लो०) अदृष्टपूर्वहृषितोस्मिदृष्ट्वाभयेनचप्रव्यथितं मनोमे ॥ तदेवमेदर्शयदेवरूपंप्रसीददेवेशजगन्निवास ॥ ४५ ॥ अदृष्टपूर्वम् । हृषितः । अस्मि । दृष्ट्वा । भयेन । च । प्रव्यथितम् । मनः । मे । तत् । एव । मे । दर्शय । देव । रूपम् । प्रसीद । देवेश । जगन्निवास ॥ ४५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् पूर्वकबीभीनहींदेख्येहुएइसविश्वरूपकूं देखेकै मैंअर्जुन हर्षवान् हूँआहूं तथा भयकरिकै मेरा मन व्याकुलहुआहै यातैं मैंअर्जुनकेताई सोपहला रूप हों दिखावो हेदेव हेदेवेश हेजगन्निवास मेरेऊपरि प्रसादकूंकरौ ॥ ४५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् मैंअर्जुननैं पूर्व कदाचित्भीनहींदेखाहुआ ऐसाजो आपकायहविश्वरूपहै ॥ तिसआपकेविश्वरूपकूंदेखिकै मैंअर्जुन हर्षकूंप्राप्तहोताभयाहूं ॥ तथा तिसविकरालरूपकेदर्शनतैं उत्पन्नभयाजोभयहै ॥ तिसभयकरिकै हमारामन व्याकुलहोताभयाहै ॥ यातैं हेभगवन् मैंअर्जुनकेताई सोप्राणोंतैंभीप्रिय आपणा पूर्वलेखहीं दिखावो ॥ हेदेव अर्थात् हेस्वप्रकाशरूप ॥ तथा हेदेवेश अर्थात् हेसर्वदेवताओंकेनियंता ॥ तथा हेजगन्निवास अर्थात् हेसर्वजगत्काआधाररूप ॥ मैंअर्जुनऊपरि तिसपूर्वलेखकादर्शनरूपप्रसादकूंकरौ इति ॥ ४५ ॥ * ॥ अब जिसपूर्वलेखकेदर्शनकी अर्जुननैं प्रार्थनाकरीहै ॥ तिसरूपकूं सोअर्जुन विशेषणोंकरिकैकथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) किरीटिनंगदिनंचक्रहस्तमिच्छामित्वांद्रष्टुमहंतथैव ॥ तेनैवरूपेणचतुर्भुजेनसहस्रबाहोभवविश्वमूर्ते ॥ ४६ ॥ किरीटिनं । गदिनं । चक्रहस्तम् । इच्छामि । त्वां । द्रष्टुम् । अहं । तथा । एव । तेनैव । रूपेण । चतुर्भुजेन । सहस्रबाहो । भव । विश्वमूर्ते

॥ ४६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् मैंअर्जुन किरीटवाले तथागदावाले तथाचक्रहैहस्तविषेजिनके ऐसेतुमारेकूँ पूर्वकीन्याई
हीं देखणेकूँ इच्छताहूँ यातैं हेसहस्रबाहुवाला हेविश्वमूर्ति अवीआप तिसंपूर्वले चतुर्भुज रूपकरिकै ॥ ४६ ॥ (इतिप०)

॥ टीका ॥ हेभगवन् किरीटकूँधारणकरणेहारे तथागदाकूँधारणकरणेहारे तथाचक्रहैहस्तविषेजिनके ऐसेआपपरमेश्वरकूँ मैंअर्जुन इस विश्वरूपतैपूर्व जैसे देखताभ
याहूँ ॥ तिसीआपकेसुंदरस्वरूपकूँ अवी मैं अर्जुन देखणेकीइच्छाकरताहूँ ॥ यातैं हेसहस्रबाहो अर्थात् हेअनेकसहस्रभुजावांवाला ॥ तथा हेविश्वमूर्ते अर्थात् हेसर्व
विश्वरूपमूर्तिकूँधारणकरणेहारा श्रीभगवान् ॥ अवीइसकालविषे इसआपकेविश्वरूपकाउपसंहारकरिकै तिसंपूर्वलेचतुर्भुजस्वरूपकरिकै प्रगटहोवौ ॥ इतनैकहणे
करिकै यह अर्थसूचनकन्या ॥ अर्जुननैं सर्वकालविषे श्रीभगवान्का चतुर्भुजादिकस्वरूपहीं देखीताहै इति ॥ ४६ ॥ * ॥ इसप्रकारतैं अर्जुनकरिकैप्रार्थनाक
न्याहुआ श्रीभगवान् तिसअर्जुनकूँ भयकरिकैपीडितहुआदेखिकै तिसविश्वरूपकाउपसंहारकरिकै उचितवचनोंकरिकै तिसअर्जुनकूँ आश्वासनकरताहुआकहेहै ॥

(मू० श्लो०) श्रीभगवानुवाच ॥ मयाप्रसन्नेनतवार्जुनेदंरूपंपरं दर्शितमात्मयोगात् ॥ तेजोमयंविश्वमनंतमाद्यंयन्मेत्वदन्येननदृष्ट
पूर्वम् ॥ ४७ ॥ मया । प्रसन्नेन । तव । अर्जुन । ईदं । रूपं । परं । दर्शितम् । आत्मयोगात् । तेजोमयं । विद्वम् । अनंतम् । आद्यं ।
यत् । मे । त्वदन्येन । न । दृष्टपूर्वम् ॥ ४७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन प्रसन्नतावाले मैंपरमेश्वरनैं आपणेसामर्थ्यतैं तुमारेताई
यहविश्वात्मक श्रेष्ठ रूप दिखायाहै कैसाहैसोरूप तेजोमयहै तथासर्वविश्वरूपहै तथाअनंतहै तथाअनादिहै जोरूप हमारा तुमा
रतैंअन्यकिसीनैंभी नहैं पूर्वदेखाहै ॥ ४७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तू इसहमारेविश्वरूपकूँदेखिकै भयकूँमतप्राप्तहोउ ॥ कोई तुमारेकूँभयकीप्राप्तिकरणेवासतै मैंनैयहविश्वरूप दिखायानहीं ॥ किंतु प्रसन्नता
वाले मैंपरमेश्वरनैं अर्थात् तैं अर्जुनविषयकअतिशयकृपावाले मैंपरमेश्वरनैं तैंअर्जुनकेताई यहआपणा विश्वरूपात्मकश्रेष्ठरूप आपणेसामर्थ्यतैं दिखायाहै ॥ सो
केवल तुमारेऊपरिकृपादृष्टिकरिकैहीं दिखायाहै ॥ तहां (परम्) इसविशेषणकरिकै ताविश्वरूपविषे कथनकन्याजोश्रेष्ठत्वरूपपरत्वहै ॥ तिसीपरत्वकूँहीं अब स्पष्ट
करिकैकथनकरेहैं ॥ (तेजोमयमिति) हेअर्जुन कैसाहैसोहमाराविश्वरूप तेजोमयहै ॥ अर्थात् कोटिसूर्यकेप्रकाशसमानहैप्रकाशजिसका ॥ पुनःकैसाहैसोरूप वि
श्वहै ॥ अर्थात् सर्वविश्वरूपहै ॥ पुनःकैसाहै सोरूप आदिअंततैरहितहै ॥ ऐसाअपणाविश्वात्मकरूप मैंपरमेश्वरनैं केवल तैंअत्यंतप्रियभक्तअर्जुनकेताईहीं
दिखायाहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् यहविश्वात्मकरूप मैंपरमेश्वरनैं प्रसन्नहोईकै केवल तैंअर्जुनकेताईहीं दिखायाहै ॥ यहआपकाकहणा संभवतानहीं ॥ काहेतैं

धृतराष्ट्रकेगृहविषे भीष्मादिकोंकूंभी यहविश्वरूप आपनै दिखायाथा ॥ तथा बाल्यअवस्थाविषे यशोदामाताकूंभी यहविश्वरूप आपनै दिखायाथा ॥ तथा अक्रूरकूंभी यहविश्वरूप आपने दिखायाथा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ हेअर्जुन तिनभीष्मादिकोंकूं जोहमनै विश्वरूपदिखायाथा सोइसविश्वरूपका एकअवां तरूपहींथा ॥ यातैं सारूप सर्वतैंउत्तमनहींथा ॥ औरयहजोविश्वात्मकरूप हमनै तुमारेकूदिखायाहै ॥ सोसर्वतैं श्रेष्ठहै ॥ दूसरेकिसीनैभी पूर्व यहरूप देख्यानहीं ॥ इसप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥ (यन्मेइति) हेअर्जुन जोयह हमाराविश्वात्मकरूप तुमारेतैं अन्यकिसीनैभी पूर्वदेख्यानहीं ॥ सोयहविश्वात्मकआपणास्वरूप मैपरमेश्वरनै रूपाकरिकै तैं अर्जुनकेताई अभी दिखायाहै इति ॥ ४७ ॥ ❀ ॥ हेअर्जुन इसविश्वरूपकादर्शनरूप जो अत्यंतदुर्लभ हमाराप्रसादहै ॥ तिसहमारे प्रसादकूं प्राप्तहोइकै तूंअर्जुन अब कृतार्थहीं हुआहैं ॥ इसअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान् अब ताविश्वरूपकीदुर्लभताकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) नवेदयज्ञाध्ययनैर्नदानैर्नचक्रियाभिर्नतपोभिरुग्रैः ॥ एंव रूपः शक्य अहं नृलोके द्रष्टुं त्वदन्येन कुरुप्रवीर ॥ ४८ ॥
न । वेदयज्ञाध्ययनैः । न । दानैः । न । च । क्रियाभिः । न । तपोभिः । उग्रैः । एंव । रूपः । शक्यः । अहं । नृलोके । द्रष्टुं । त्वदन्ये
न । कुरुप्रवीर ॥ ४८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेकुरुवंशविषेअतिसूरवीरअर्जुन इसमनुष्यलोकविषे इसप्रकारके विश्वरूपवाला
मैभगवान् तुमारेतैंअन्यपुरुषनै वेदोंकेतथायज्ञोंकेअध्ययनकरिकै देखणेकूं नहीं शक्यहूं तथादानोंकरिकै नहीं देखणेकूं शक्यहूं
तथा कर्मोंकरिकैभी नहीं देखणेकूंशक्यहूं तथाउग्र तपोकरिकै नहीं देखणेकूंशक्यहूं ॥ ४८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन ऋग् यजुष् साम अथर्वण इनच्यारिवेदोंका जो गुरुमुखतैंअक्षरोंकाग्रहणरूप अध्ययनहै ॥ तथा पूर्वमीमांसा कल्पसूत्र इत्यादिकोंकरिकै वेदबोधितकर्मरूपयज्ञोंका जो अर्थविचाररूपअध्ययनहै ॥ तिनवेदोंकेअध्ययनकरिकै ॥ तथायज्ञोंकेअध्ययनकरिकै ॥ तथा तुलापुरुषदान कन्यादान गौसुवर्णअन्नदान इत्यादिकदानोंकरिकै ॥ तथा अग्निहोत्रादिक श्रौतस्मार्त्तकर्मोंकरिकै ॥ तथा कायइंद्रियोंकेशोषकहोणेतैं करणेविषे अत्यंतकठिन ऐसेजे कृच्छ्रचांद्रायणादिकतपहैं ऐसेतपोकरिकै ॥ इसमनुष्यलोकविषे इसप्रकारकेविश्वरूपवाला मैपरमेश्वर तुमारेतैंअन्यपुरुषनै देखणेकूं अशक्यहूं ॥ अर्थात् मैपरमेश्वरकेअनुग्रहतैंरहितपुरुष वेदोंकेअध्ययनकरिकै तथावेदप्रतिपादितकर्मोंकेयथार्थज्ञानकरिकै तथादानोंकरिकै तथाउग्रतपोकरिकै मेरेइसविश्वरूपकूं देखिसकतेनही ॥ ऐसाअत्यंतदुर्लभ यहविश्वरूप हमनै रूपाकरिकै तुमारेकूदिखायाहै ॥ तिसरूपकेदर्शनतैं अभी तूं कृतार्थहुआहै इति ॥ तहां मूलश्लोकविषे (शक्यः अहम्) इसवचनकेस्थानविषे यद्यपि (शक्योऽहम्) इसप्रकारकावचनही करणेयोग्यथा ॥ तथापि (शक्यअहम्) इसवचनविषेजो शक्य इसपदतैउचर

विसर्गो कालोपहै सो छांदसहै ॥ और यद्यपि एकनकारके पठन तैहीं अध्ययन दान किया तप इनसवों कानिषेध होइ सकेहै ॥ तथापि अध्ययन दान किया तप इन चारों के साथि जो भिन्न भिन्न नकार का पठन कन्याहै ॥ सो तिस विश्वरूप के दर्शन विषे तिन अध्ययनादिकों के निषेध की दृढता वासतै कथन कन्याहै ॥ और (नचक्रियाभिः) इस वचन विषे स्थित जो चकार है ॥ सो चकार ईहां नही कह्योहु ए दूसरे साधनों का भी समुच्चय करने वासतै है ॥ अर्थात् मै परमेश्वर के अनुग्रह तै विना दूसरे किसी भी साधन करिके यह हमारा विश्वरूप देख्या जाता नही इति ॥ ४८ ॥ * ॥ हे अर्जुन तुमारे अनुग्रह वासतै मै परमेश्वर नै प्रगट कन्या जो यह आपणा विश्वरूप है ॥ तिस हमारे विश्वरूप करिके जो कदाचित् तुमारे कूं उद्वेग प्राप्त हु ए आहै ॥ तौ मै परमेश्वर इस आपणे विश्वरूप का अबी उपसंहार करताहूं ॥ तूं व्यथा कूं मत प्राप्त होउ ॥ इस अर्थ कूं अब श्री भगवान् अर्जुन के प्रति कथन करेहै ॥

(मू० श्लो०) माते व्यथामाच विमूढभावो दृष्ट्वा रूपं धोरमीदृङ्ममेदम् ॥ व्यपेतभीः प्रीतमनाः पुनस्त्वं तदेव मे रूपमिदं प्रपश्य ॥ ४९ ॥

मां । ते । व्यथा । मां । च । विमूढभावः । दृष्ट्वा । रूपम् । धोरम् । ईदृक् । मम । ईदम् । व्यपेतभीः । प्रीतमनाः । पुनः । त्वम् । तत् । एवं । मे । रूपम् । ईदम् । प्रपश्य ॥ ४९ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हे अर्जुन मै परमेश्वर के इस प्रकार के इस धोर रूप कूं देख कै तै अर्जुन कूं व्यथा मत होवौ तथा विमूढभाव भी मत होवौ किंतु भयतै रहित प्रसन्न मन हु आ तूं अर्जुन पुनः मै परमेश्वर के तिस पूर्व ले इस रूप कूं ही देख ॥ ४९ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे अर्जुन अनेक बाहु मुखादिकों करिके युक्त होणै अत्यंत भयानक जो यह हमारा विश्वरूप है ॥ तिस हमारे विश्वरूप कूं देख कै स्थित हु आ जो तूं अर्जुन है ॥ तिस तुमारे कूं व्यथा मत प्राप्त होवौ ॥ अर्थात् भयरूप निमित्त तै उत्पन्न भई जा पीड़ा है सा पीड़ा मत प्राप्त होवौ ॥ तथा मेरे इस विश्वरूप के दर्शन हु ए भी जो तुमारे कूं विमूढभाव प्राप्त हु आहै ॥ अर्थात् व्याकुल चित्त पणा तथा अपरितोष प्राप्त भयाहै ॥ सो विमूढभाव भी तुमारे कूं मत प्राप्त होवौ ॥ किंतु भयतै रहित होइ कै तथा प्रसन्न मन होइ कै तूं अर्जुन पुनः तिसी हमारे चतुर्भुजरूप कूं देख ॥ अर्थात् इस विश्वरूप तै पूर्व तूं अर्जुन जिस हमारे चतुर्भुज वासुदेवरूप कूं सर्वदा देखता था ॥ तिसी हमारे चतुर्भुजरूप कूं तूं अबी भयतै रहित होइ कै तथा संतोष युक्त होइ कै देख ॥ ईहां भयतै रहित पणा तथा संतोष यह दोनों श्री भगवान् नै (प्रपश्य) इस वचन विषे स्थित प्र इस शब्द करिके कथन करेहै इति ॥ ४९ ॥ * ॥ अब संजय धृतराष्ट्र के प्रति कथन करेहै ॥

(मू० श्लो०) संजय उवाच ॥ इत्यर्जुनं वासुदेवस्तथोक्त्वा स्वकं रूपं दर्शयामास भूयः ॥ आश्वासयामास च भीतमेनं भूत्वा पुनः सौम्य

वपुर्महात्मा ॥ ५० ॥ इति । अर्जुनम् । वासुदेवः । तथा । उक्त्वा । स्वकम् । रूपम् । दर्शयामास । भूर्यः । आश्वासयामास ।
 च । भूतिम् । ऐनम् । भूत्वा । पुनः । सौम्यवपुः । महात्मा ॥ ५० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेधृतराष्ट्र सोऽकृष्णभगवान् अर्जुनके
 प्रति इसप्रकारकावचन कहिकै तिसीप्रकारका आपणा चतुर्भुजरूप पुनः दिखावताभया तथा सोपरमकृपालुभगवान् पुनः
 तिससौम्यशरीरवाला होई कै भययुक्त इसअर्जुनक आश्वासनकरताभया ॥ ५० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेधृतराष्ट्र सोवासुदेवकृष्णभगवान् ताअर्जुनकेप्रति यहपूर्वउक्तवचनकहिकै ताविश्वरूपधारणतैपूर्व जिसप्रकारकेरूपवालाथा तिसीप्रकारआपणारूप
 ताअर्जुनकेप्रति पुनः दिखावताभया ॥ अर्थात् मस्तकऊपरिकिरीटकंधारणकरणेहारा तथाकानोंविषे मकराकृतिकुंडलकंधारणकरणेहारा तथाच्यारोंभुजावोंविषे
 शंख चक्र गदा पद्म इनच्यारोंकंधारणकरणेहारा तथा श्रीवत्स कौस्तुभ वनमाला पीतांबर इत्यादिकोंकरिकैशोभायमान इसप्रकारके आपणेपूर्वलेखकू तिस अर्जुनके
 प्रति पुनः दिखावताभया ॥ तथा सोमहात्माकृष्णभगवान् अर्थात् परमकारुणिक तथासर्वकाईश्वर तथासर्वज्ञ इत्यादिकल्याणोंकाआकाररूप श्रीकृष्णभग
 वान् पुनः सौम्यवपुहोईकै अर्थात् परमअनुग्रहरूपशरीरवालाहोईकै पूर्वविश्वरूपकेदर्शनतैभयकूप्राप्तहुएअर्जुनकेप्रति धैर्ययुक्तवचनोंकरिकै आश्वासनकरताभया इति
 ॥ ५० ॥ ❀ ॥ तहां श्रीकृष्णभगवान्के तिस पूर्वले चतुर्भुजस्वरूपकेदर्शनतैअनंतरसोअर्जुन भयतैरहितहोईकै श्रीकृष्णभगवान्केप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥
 (मू० श्लो०) अर्जुनउवाच ॥ दृष्ट्वेदं मानुषं रूपं तव सौम्यं जनार्दन ॥ इदानीमस्मि संवृत्तः सचेताः प्रकृतिंगतः ॥ ५१ ॥ दृष्ट्वा । ईदं ।
 मानुषं । रूपं । तव । । सौम्यं । जनार्दन । ईदानीम् । अस्मि । संवृत्तः । सचेताः । प्रकृतिं । गतः ॥ ५१ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेज
 नार्दन तुमारे इस मानुष सौम्य रूपकू देखिकै अबी मैंअर्जुन अव्याकुलचित्त हुंवा हूं तथा स्वस्थताकू प्राप्तहुआहूं ॥ ५१ ॥
 (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेजनार्दन तुमारे इससौम्यमानुषरूपकूदेखिकै मैंअर्जुन अबी सचेता हुआहूं ॥ अर्थात् पूर्वविश्वरूपकेदर्शनजन्यभयकरिकैकन्येहुएव्यामोहकेअभाव
 करिकै अबीमैं चित्तकीव्याकुलतातैरहितहुआहूं ॥ तथा मैंअर्जुन अबीप्रकृतिकूप्राप्तहुआहूं ॥ अर्थात् तिसभयजन्यव्यथातैरहितहोणेतै स्वस्थभावकूप्राप्तहुआहूं
 इति ॥ ५१ ॥ ❀ ॥ तहां श्रीभगवान्ने अर्जुनऊपरिकन्याजो विश्वरूपकादर्शनरूपअनुग्रहहै ॥ ताअनुग्रहकीदुर्लभताकू श्रीभगवान् अवच्यारिश्लोकों
 करिकैकथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) श्रीभगवानुवाच ॥ सुदुर्दर्शमिदं रूपं दृष्टवानसि यन्मम ॥ देवा अप्यस्य रूपस्य नित्यं दर्शनकांक्षिणः ॥ ५२ ॥ सुदुर्दर्शम् ।
इदं । रूपं । दृष्टवानसि । यत् । मम । देवाः । अपि । अस्य । रूपस्य । नित्यं । दर्शनकांक्षिणः ॥ ५२ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हे अ-
र्जुन मैं परमेश्वरके जिस विश्वरूपकू तू अभी देखता भया है यह हमारा विश्वरूप अत्यंत देखनेकू अशक्य है जिस कारणतैं देवता भी
नित्यहीं इस विश्वरूपके दर्शनकी इच्छाकरेहैं ॥ ५२ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे अर्जुन मैं परमेश्वरके जिसा विश्वरूपकू तू अभी देखता भया है ॥ सो यह हमारा विश्वरूप अत्यंत देखनेकू अशक्य है ॥ जिस कारणतैं इंद्रादिक देवता भी
सर्वदा इस हमारे विश्वरूपके दर्शनकी इच्छाहीं करते रहते हैं ॥ परंतु जैसे तू अर्जुन इस हमारे विश्वरूपकू देखता भया है ॥ तैसे ते इंद्रादिक देवता पूर्वभी इस हमारे
विश्वरूपकू नहीं देखते भये हैं ॥ और आगे भी नहीं देखेंगे इति ॥ ५२ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हे भगवन् ते इंद्रादिक देवता इस आपके विश्वरूपकू किस कारणतैं पूर्व
नहीं देखते भये हैं तथा आगे नहीं देखेंगे ॥ ऐसी अर्जुनकी शंका के हुए ॥ मैं परमेश्वरकी अनन्य भक्ति तैं रहित होनेतैं ते देवता इस हमारे विश्वरूपकू पूर्व नहीं देखते भये हैं तथा
आगे नहीं देखेंगे ॥ इस प्रकारके उत्तरकू श्रीभगवान् कथन करे है ॥

(मू० श्लो०) नाहं वेदैर्न तपसान दानेन न चेज्यया ॥ शक्य एवंविधो द्रष्टुं दृष्टवानसि मां यथा ॥ ५३ ॥ न । अहं । वेदैः । न । तपसा ।
न । दानेन । न । च । ईज्यया । शक्यः । एवंविधः । द्रष्टुं । दृष्टवानसि । मां । यथा ॥ ५३ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हे अर्जुन
तू जिस प्रकारतैं मैं विश्वरूपकू देखता भया है इस प्रकारके विश्वरूपवाला मैं परमेश्वर वेदोंके अध्ययन करिके भी देखनेकू नहीं शक्य हूं
तथा तप करिके भी देखनेकू नहीं शक्य हूं तथा दान करिके भी देखनेकू नहीं शक्य हूं तथा अग्निहोत्रादिक कर्म करिके भी देखनेकू
नहीं शक्य हूं ॥ ५३ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ मैं विश्वरूप परमेश्वरकू जिस प्रकारतैं तू अर्जुन अभी देखता भया है ॥ इस प्रकारके विश्वरूपवाला मैं परमेश्वर ऋगादिक चारि वेदोंके अध्ययन करिके भी देखने
कू शक्य नहीं हूं ॥ तथा कृच्छ्रचांद्रायणादिक तप करिके भी मैं देखनेकू शक्य नहीं हूं ॥ तथा तुलापुरुष कन्या गौ सुवर्ण अन्न इत्यादिक पदार्थोंके दान करिके भी मैं देख-
नेकू शक्य नहीं हूं ॥ तथा अग्निहोत्रादिक श्रौतस्मार्तकर्मों करिके भी मैं देखनेकू शक्य नहीं हूं ॥ तहां पूर्व (न वेदयज्ञाध्ययनैः) इस श्लोकविषे जो अर्थ कथन कन्या
था ॥ सोई ही अर्थ (नाहं वेदैर्न तपसा) इस श्लोकविषे जो अभी पुनः कथन कन्या है ॥ सो तिस विश्वरूपके दर्शनकी अत्यंत दुर्लभताके बोधन करने वासतै कथन कन्या है

यातैं इसश्लोकविषे पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ ५३ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकारकेविश्वरूपवालातूं जबीवेदोंकेअध्ययनकरिकै
तथा तपकरिकै तथादानकरिकै तथाअग्निहोत्रादिककर्मोंकरिकै देखणेकूं अशक्यहैं ॥ तबी दूसरेकिसउपायकरिकैतूं देखणेकूंशक्यहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहु
ए ॥ श्रीभगवान् ताविश्वरूपकेदर्शनकाउपाय कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) भक्त्यात्वनन्ययाशक्यअहमेवंविधोर्जुन ॥ ज्ञातुंद्रष्टुंचतत्त्वेनप्रवेष्टुंचपरंतप ॥ ५४ ॥ भक्त्या । तुं । अनन्यया । श
क्यः । अहम् । एवंविधः । अर्जुन । ज्ञातुं । द्रष्टुं । चं । तत्त्वेन । प्रवेष्टुं । चं । परंतप ॥ ५४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन हेपरंतप
इसप्रकारकेविश्वरूपवाला मैंपरमेश्वर अनन्य भक्तिकरिकै हों जानणेकूं शक्यहूं तथा वास्तव्वरूपकरिकै साक्षात्कारकरणेकूं शक्य
हूं तथा अभेदरूपकरिकैप्राप्तहोणेकूं शक्यहूं ॥ ५४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेपरंतप अर्थात् हे अज्ञानरूपशत्रुकूनाशकरणेहारा अर्जुन ॥ इसप्रकारकेदिव्य विश्वरूपकूंधारणकरणेहारा मैंपरमेश्वर एकअनन्यभक्तिकरिकैहों
जानणेकूंशक्यहूं ॥ अर्थात् सर्वविषयवासनाकापरित्यागकरिकै एकमैंपरमेश्वरविषयक जानिरतिशयप्रीतिरूप अनन्यभक्तिहै ॥ ताअनन्यभक्तिकरिकैहों यहअ
धिकारीजन शास्त्ररूपप्रमाणतैं मैंपरमेश्वरकूंजानिसकैहैं ॥ अन्यकिसीभीउपायकरिकै जानिसकतेनहीं ॥ हेअर्जुन तिसअनन्यभक्तिकरिकै शास्त्रप्रमाणतैं मैंपरमेश्वर
केवल जानणेकूंहीं शक्यनहींहूं ॥ किंतु तिसअनन्यभक्तिकरिकै मैंपरमेश्वर वेदांतवाक्योंके श्रवणमननानिदिध्यासनकीपरिपाकताकरिकै आपणेवास्तवस्वरूपतैं साक्षा
त्कारकरणेकूंभी शक्यहूं ॥ अर्थात् ता अनन्यभक्तिकरिकै यहअधिकारीपुरुष श्रवणमननादिकसाधनोंकरिकै मैंपरमेश्वरकूं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारतैं साक्षा
त्कारभीकरेहैं ॥ और तिससाक्षात्कारकीप्राप्तितैंअनंतर तिससाक्षात्कारकरिकै अविद्याकेनिवृत्तहुए मैंपरमेश्वर तिनतत्त्ववेत्ताभक्तजनोंकूं आपणेवास्तवस्वरूपतैं
प्राप्तहोणेकूंभी शक्यहूं ॥ अर्थात् तिनतत्त्ववेत्ताभक्तजनोंकूं मैंपरमेश्वर आपणाआत्मारूपकरिकैप्राप्तहोवूंहूं ॥ ईहां (हेपरंतप) इससंबोधनकरिकै श्रीभगवान् नैं
अर्जुनकूं अज्ञानरूपशत्रुकीनिवृत्तिकरिकै आपणेअद्वितीयनिर्गुणस्वरूपविषे अभेदरूपकरिकै प्रवेशकीयोग्यता सूचनकरी ॥ और (शक्यःअहम्) इसवचनकेस्थान
विषे यद्यपि (शक्योऽहं) इसप्रकारकावचन चाहीताथा ॥ तथापि शक्य इसपदतैंउत्तर जो विसर्गोकालोपकन्याहै ॥ सो पूर्वकीन्याई छांदसहै इति ॥ ५४ ॥

❀ ॥ अब श्रीभगवान् नैं समग्रगीताशास्त्रका सारभूतअर्थ मुमुक्षुजनोंकेअमुष्ठानवासतै एकठाकरिकै कथनकरीताहै ॥

(मू० श्लो०) मत्कर्मकृन्मत्परमोमद्भक्तःसंगवर्जितः ॥ निर्वैरःसर्वभूतेषुयःसमामेतिपांडव ॥ ५५ ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु

ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विश्वरूपदर्शननाम एकादशोऽध्यायः समाप्तः ॥ ११ ॥ मत्कर्मकृत् । मत्परमः । मद्भक्तः ।
संगवर्जितः । निर्वैरः । सर्वभूतेषु । यः । सं । माम् । एति । पांडव ॥ ५५ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हे पांडव जो पुरुष मत्कर्मकृत् है
तथा मत्परम है तथा मेरा भक्त है तथा संगतैरहित है तथा सर्वभूतों विषे निर्वैर है सो पुरुष ही मैं परमेश्वर कूं अभेद रूप करि कै प्राप्त होवै
है ॥ ५५ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे पांडव अर्थात् हे पांडुराजा के पुत्र अर्जुन जो अधिकारी पुरुष मत्कर्मकृत् है ॥ अर्थात् जो अधिकारी पुरुष मैं परमेश्वर की प्रसन्नता वासतै ही वेदविहित अग्नि
होत्रादिक श्रौतस्मार्त्तिकमों कूं करे है ॥ शंका ॥ हे भगवन् स्वर्गादिक फलों की कामना वों के विद्यमान हुए इस अधिकारी पुरुष विषे सो मत्कर्मकृत् पणा कैसे संभवैगा ॥ ऐ
सी अर्जुन की शंका के हुए श्री भगवान् कहे है (मत्परमः इति) हे अर्जुन जो अधिकारी पुरुष मत्परम है ॥ अर्थात् मैं परमेश्वर ही हूं प्राप्त रूप करि कै निश्चित जिस कूं दूसरे
स्वर्गादिक फल जिस कूं प्राप्त रूप करि कै निश्चित हैं नहीं तिस पुरुष कानाम मत्परम है ॥ जिस कारण तैं सो अधिकारी पुरुष मत्कर्मकृत् है तथा मत्परम है ॥ तिस कारण तैं
हीं सो अधिकारी पुरुष मद्भक्त है ॥ अर्थात् मैं परमेश्वर के प्राप्ति की आशा करि कै जो अधिकारी पुरुष सर्व प्रकारों करि कै मैं परमेश्वर के भजन परायण है ॥ शंका ॥ हे भगवन्
पुत्रादिक पदार्थों विषे स्नेह के विद्यमान हुए तिस अधिकारी पुरुष विषे सो तुमारा भक्त पणा भी कैसे संभवैगा ॥ ऐसी अर्जुन की शंका के हुए श्री भगवान् कहे है (संगवर्जितः
इति) जो अधिकारी पुरुष संगतैरहित है ॥ अर्थात् पुत्र स्त्री धन गृह इस तैं आदिलै के जित नैं की बाह्य अनात्म पदार्थ हैं तिन सर्व पदार्थों की इच्छा तैरहित है ॥ शंका ॥
हे भगवन् शत्रु वों विषे द्वेष के विद्यमान हुए तिस अधिकारी पुरुष विषे सो संगतैरहित पणा भी कैसे संभवैगा ॥ ऐसी अर्जुन की शंका के हुए श्री भगवान् कहे है (निर्वैरः सर्वभूतेषु
इति) हे अर्जुन जो अधिकारी पुरुष सर्वभूतों विषे वैर तैरहित है ॥ अर्थात् जे प्राणी आपणा अपकार करे हैं ऐसे अपकारी प्राणीयों विषे भी जो पुरुष द्वेष तैरहित है ॥ हे अर्जु
न इस प्रकार जो अधिकारी पुरुष मत्कर्मकृत् है तथा मत्परम है तथा मद्भक्त है तथा संगतैरहित है तथा सर्वभूतों विषे निर्वैर है ॥ सो अधिकारी पुरुष ही मैं परमेश्वर कूं अभेद
रूप करि कै प्राप्त होवै है ॥ हे अर्जुन यह जो सर्वशास्त्र कासार भूत अर्थ हम नैं तुमारे प्रति उपदेश कन्या है ॥ सो यह अर्थ ही तुमारे कूं जानने योग्य है ॥
इस अर्थ के जानने तैं परे दूसरा कोई तुमारे कूं कर्त्तव्य नहीं है इति ॥ और किसी टीका विषे तों (मत्परमः) इस पद का यह अर्थ कथन कन्या है ॥ मीयते पदार्थों न्या इति
मा ॥ अर्थ यह जिस करि कै पदार्थ निश्चय कन्या जावै है ता कानाम मा है ॥ अर्थात् नेत्रादिक इंद्रिय जन्य अंतःकरण की वृत्ति करि कै ही सर्व पदार्थ निश्चय कन्या जावै हैं ॥
या तैं ता इंद्रिय जन्य वृत्ति कानाम मा है ॥ तहां मत्परा है क्या सर्वत्र मैं परमेश्वर के स्वरूप ग्रहण परा है सा इंद्रिय जन्य वृत्ति रूप मा जिस पुरुष की ता कानाम मत्परम है इति ॥